मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ दिसम्बर : २०२०, विक्रमी सम्वत् : २०७७
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७ अंक : ६

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

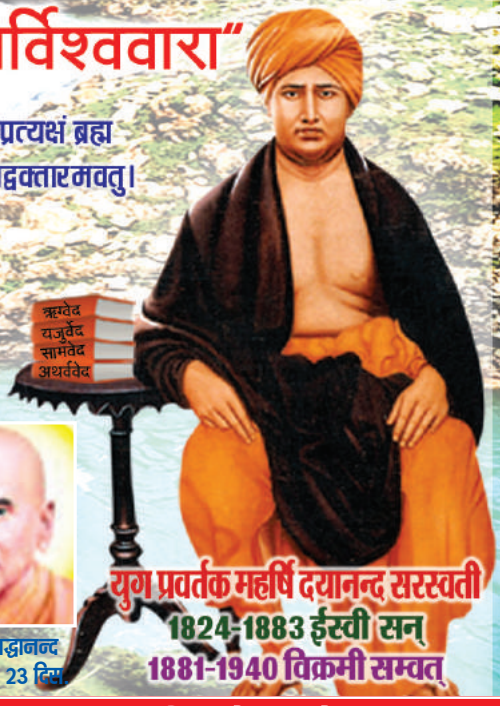

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

राम प्रसाद बिस्मिल
बलिदान : 19 दिस.

अशफ़ाक उल्ला खां
बलिदान : 19 दिस.

ठाकुर सेशन सिंह
बलिदान : 19 दिस.

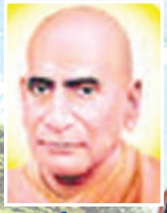
स्वामी श्रद्धानन्द
बलिदान : 23 दिस.

भारतीय दर्शन और महर्षि देव दयानन्द का दृष्टिकोण- पेज : 4-5

ओ३म्

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किन्चित परं स्मृतम्॥

गौएं स्वर्ग की सीढी होती हैं, गौएं स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं, उनसे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

कीर्तिनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्व पापहरं शिवम्॥

गायों के नाम और गुणों का कीर्तन तथा श्रवण करना, गायों का दान देना और उनका दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है और उनसे सम्पूर्ण पापों का नाश तथा परम कल्याण की प्राप्ति होती है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

ओउम् गां मां हिन्सी। गवो भगो गाव इन्द्रो में॥ वेद

महाकल्याणकारी गौमाता को मत मारो। उनका दूध, गोबर, मूत्र हमारा भाग्य है और ऐश्वर्य है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

तृणोदकादि संयुक्तं यः प्रद्धात् गवान्हिकम्।
सोऽश्मेधसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः॥

जो गौओं को प्रतिदिन जल तृण सहित भोजन प्रदान करता है। उसे अश्वमेध यज्ञ के बराबर का पुण्य प्राप्त होता है। इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

यत्र गावस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

जहां गौओं की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

गाष्च शुश्रुषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानापि सुदुर्लभान्॥

जो पुरुष गौओं की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करता है, उस पर संतुष्ट होकर गौएं उसे अतिउत्तम वर प्रदान करती हैं।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : लव जेहाद पर योगी...	2
2.	जीवन में परोपकार आवश्यक	3
3.	भारतीय दर्शन और महर्षि...	4-5
4.	चार वेद-चार वाक्य	6-7
5.	श्रीकृष्ण कौन थे, कैसे थे	7
6.	सामवेद उपासना तथा समरसता...	8-9
7.	महाभारत का एक प्रसंग जो...	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत...	15
10.	महर्षि दयानन्द का अमर बलिदान	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : कैंसर को दूर रखने वाले फूड्स	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।। ओ३म् ।।

लव जेहाद पर योगी सरकार द्वारा उठाए कदम का स्वागत

लव जेहाद कथित रूप से मुस्लिम पुरुषों द्वारा गैर-मुस्लिम समुदायों से जुड़ी महिलाओं को इस्लाम में धर्म परिवर्तन के लिए लक्षित करके प्रेम का ढोंग रचना है। लव जिहाद की सर्वप्रथम अवधारणा 2009 में भारत में राष्ट्रीय स्तर पर केरल में जगी। केरल से ही अन्य विभिन्न स्थानों पर प्राय: भारत के सभी राज्यों, न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में लव जेहाद की विभिन्न घटनाओं ने सभी जनमानस को आतंकित कर दिया। जहां भारतीय परम्पराएं भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व के लिए आस्था एवं श्रद्धा का केंद्र है वहीं इस लव जेहाद ने सभी आस्था एवं श्रद्धा को अस्त-व्यस्त कर दिया। ऐसी विकट एवं विषम परिस्थितियों में जहां कोई लव जेहाद से निपटने का रास्ता नजर नहीं आ रहा था वहीं भारत के राज्य उत्तर प्रदेश ने लव जेहाद के खिलाफ सर्वप्रथम कानून बनाकर अध्यादेश पारित किया। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भारतीय संस्कृति तथा भारतीय परंपराओं के पोषक तथा हिन्दुत्व की रक्षा के लिए कटिबद्ध योगी आदित्यनाथ जी ने लव जेहाद के खिलाफ कानून पारित कर उत्तर प्रदेश में मिसाल कायम की। जहां छोटी-छोटी मासूब बच्चियां 16-18 साल की इन मजहबी आतंकियों के प्रेमपाश में बंध जाती थीं। इस्लामिक कट्टरपंथी, भोलीभाली हिंदू कन्याओं को प्रथम हिन्दू बनकर उन्हें अपने प्रेमजाल में बांधते थे, फिर बाद में अपनी वास्तविकता को उजागर कर उनसे जबरन शादी का ढोंग रचकर विवाह करते तथा उसके बाद लड़की को तलाक देकर दूर हो जाते थे इससे लड़की की सम्पूर्ण जिंदगी बर्बाद हो जाती थी। ऐसी ही जाने कितनी ही कन्याएं इस लव जेहाद का शिकार हुईं। कितनी ही मासूम बच्चियों की जिंदगी बर्बाद हो गयी। कितनी ही लड़कियों को इन जेहादियों ने मौत के घाट उतार दिया। ऐसी विषम परिस्थितियों में जहां मानवता समाप्त हो रही थी, लड़कियां कुछ भी समझ नहीं पा रही थीं, लड़कियों के माता-पिता भी अपनी कन्याओं को लेकर चिंतित हो रहे थे। ऐसे में कर्तव्यनिष्ठ संन्यासी, गोरखनाथ के महंत योगी ने इस लव जेहादियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए उत्तर प्रदेश में 10 साल की सजा तथा 50 हजार तक जुर्माने का प्रावधान किया। मैं योगी सरकार द्वारा उठाए गए इस कदम का स्वागत करता हूं। लव जेहादियों के खिलाफ कानून बनाने वाला उत्तर प्रदेश भारत का पहला राज्य बन गया है और हम यह आशा करते हैं जब-जब कुछ ऐसी विषम परिस्थितियां उत्पन्न होगीं तब-तब योगी सरकार ऐसे कठोर निर्णय लेने में सक्षम होगी। जिससे देश की बहन-बेटियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। योगी जी का पुन: धन्यवाद!!

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भारतीय संस्कृति तथा भारतीय परंपराओं के पोषक तथा हिन्दुत्व की रक्षा के लिए कटिबद्ध योगी आदित्यनाथ जी ने लव जेहाद के खिलाफ कानून पारित कर उत्तर प्रदेश में मिसाल कायम की। जहां छोटी-छोटी मासूब बच्चियां 16-18 साल की इन मजहबी आतंकियों के प्रेमपाश में बंध जाती थीं। इस्लामिक कट्टरपंथी, भोलीभाली हिंदू कन्याओं को प्रथम हिन्दू बनकर उन्हें अपने प्रेमजाल में बांधते थे, फिर बाद में अपनी वास्तविकता को उजागर कर उनसे जबरन शादी का ढोंग रचकर विवाह करते तथा उसके बाद लड़की को तलाक देकर दूर हो जाते थे इससे लड़की की सम्पूर्ण जिंदगी बर्बाद हो जाती थी। ऐसी ही जाने कितनी ही कन्याएं इस लव जेहाद का शिकार हुईं। कितनी ही मासूम बच्चियों की जिंदगी बर्बाद हो गयी। कितनी ही लड़कियों को इन जेहादियों ने मौत के घाट उतार दिया। ऐसी विषम परिस्थितियों में जहां मानवता समाप्त हो रही थी, लड़कियां कुछ भी समझ नहीं पा रही थीं, लड़कियों के माता-पिता भी अपनी कन्याओं को लेकर चिंतित हो रहे थे। ऐसे में कर्तव्यनिष्ठ संन्यासी, गोरखनाथ के महंत योगी ने इस लव जेहादियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए उत्तर प्रदेश में 10 साल की सजा तथा 50 हजार तक जुर्माने का प्रावधान किया। मैं योगी सरकार द्वारा उठाए गए इस कदम का स्वागत करता हूं।

जीवन में परोपकार आवश्यक

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

सभी मनुष्यों जीव जन्तुओं की सेवा करना, उनका सुख-दुख में साथ देना ही परोपकार है। भर्तृहरि ने नीतिशतक में लिखा है, 'सूर्य कमल को स्वयं खिलाता है। चंद्रमा कुमुदिनी को स्वयं विकसित करता है। बादल स्वयं, बिना किसी के कहे, जल देता है। महान आत्माएं यानी श्रेष्ठ जन अपने आप दूसरों की भलाई करते हैं।' जब प्रकृति में सभी की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से परोपकार है तो हमें अपने जीवन में परोपकार को आवश्यक मानकर दूसरों की भलाई करनी चाहिए।

इसका आशय यह है कि प्रकृति का हर तत्व दूसरों की भलाई बिना किसी के कहे करता है। यही कारण है कि हमें भौतिक जगत का प्रत्येक पदार्थ मनुष्य के उपकार में लीन दिखता है। सूर्य, चंद्रमा, तारे, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, औषधियां, वनस्पतियां, फल, फूल और पालतू पशु दिन-रात मनुष्य के कल्याण में लगे हुए हैं। ये सभी दूसरों के उपकार के लिए कुछ न कुछ देते हैं। यदि ये परोपकार में लगे हैं तो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के प्रति उपकार क्यों नहीं करना चाहिए? प्रकृति का यह एक महान संदेश है। जैसे सूर्य अपना प्रकाश स्वयं ही सब को समान रूप से देता है, हमारे जीवन का उद्देश्य भी ऐसा ही होना चाहिए। जैसे बादल हमें जल देते हैं और किसी से यह नहीं पूछते कि 'तुम सुपात्र हो या नहीं' वैसे ही हमारा जीवन भी दूसरों को देने के लिए होना चाहिए।

वेदों में कहा गया है कि मनुष्यों को ऐसा पवित्र और शुद्ध जीवन जीना चाहिए जिससे संसार में भ्रातृ भावना और मानव समाज के प्रति उपकार की भावना, दानशीलता और सृजनता की भावना पैदा हो। वेद-दर्शन का सार हैं, वेद आदेश करते हैं- हम उत्तम बन कर, उत्तम कर्म करें। असल में, पापों से मुक्त होने और मोक्ष पाने का यही एकमात्र साधन है। एक व्यक्ति वैसे तो नियम से वेद मंत्रों का उच्चारण करता है, यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करता है, लेकिन वह परोपकार का कोई काम नहीं करता है, तो ऐसे व्यक्ति के धार्मिक अनुष्ठानों का कोई औचित्य नहीं। अच्छे बनो और अच्छे कर्म करो, यह सिद्धांत सत्य के सिद्धांत पर आधारित है। हमारी समस्या है अच्छे और बुरे में भेद कैसे करें, सत्य और असत्य में, सही और गलत में कैसे फर्क करें, किसी वस्तु के गुण-दोषों को जानने का सब से अच्छा साधन यह है कि सत्य-असत्य के सिद्धांत को अपने ऊपर लागू करें। हम यह सोचें कि जब हम अच्छा करेंगे, तो अच्छा अनुभव होगा। जब हम गलत काम या कोई दुष्टता करेंगे तो बुरा ही अनुभव होगा। सौ बात की एक बात कि दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा कि हम आप अपने साथ चाहते हैं।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था- 'यह हरेक व्यक्ति का दायित्व बनता है कि वह संसार को उतना तो अवश्य लौटा दे' जितना उसने इससे लिया है। दूसरों के लिए जीया गया जीवन ही उचित जीवन है। इसलिए जो कुछ हमारे पास है, उसमें से कुछ परोपकार में अवश्य लगाएं।

चाणक्य ने कहा था- 'परोपकार ही जीवन है। जिस शरीर से धर्म नहीं हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका, उस शरीर का क्या लाभ' सेवा या परोपकार की भावना चाहे देश के प्रति हो या किसी व्यक्ति के प्रति, वह मानवता है। परोपकार से ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग खुलता है। व्यक्ति जितना परोपकारी बनता है, उतना ही ईश्वर की समीपता प्राप्त करता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा प्राप्त करता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढ़ती है। सच्चा परोपकारी सदा प्रसन्न रहता है। वह दूसरे का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है।

परोपकार की प्रवृत्ति को अपना कर हम एक प्रकार से ईश्वर की रची सृष्टि की सेवा करते हैं। ऐसा करने से हमें जो आत्मसंतोष और तृप्ति मिलती है, उससे हमारी सारी संपत्तियों की सार्थकता साबित होती है। परोपकार की एक आध्यात्मिक उपयोगिता भी है। वह यह है कि हम दूसरों की आत्मा को सुख पहुंचा कर अपनी ही आत्मा को सुखी बनाते हैं। जब हम परोपकार को अपना स्वभाव बना लेते हैं तो उसका दोहरा लाभ होता है। परोपकार की नीति के तहत किसी की सहायता करके और दूसरों के प्रति सहानुभूति दर्शा कर जिन दीनहीनों का कष्ट दूर किया जाएगा, उनमें सद्भावपूर्ण मानवीय चेतना जाग्रत होगी। ऐसा होने से वे भी दूसरों की सेवा और सहयोग करने का महत्व समझने लगते हैं। ऋग्वेद का मन्त्र कहता है कि परमार्थ और परोपकार के कार्यों में निंदा, लांछन, उपहास यश-अपयश, हानि-लाभ आदि का भय नहीं करना चाहिए। ऐसे मनुष्यों की रक्षा स्वयं परमात्मा करता है।

भारतीय दर्शन और महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण

आचार्य उदयवीर शास्त्री

भारतीय दर्शन साधारण रूप से दो भागों में विभक्त हैं- आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। आस्तिक दर्शनों में इन छह दर्शनों की गणना की जाती है- सांख्य, वैशेषिक, योग, न्याय, वेदान्त, मीमांसा। नास्तिक दर्शनों में चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन तथा जैन दर्शन माने जाते हैं। आस्तिक-नास्तिक दर्शनों का भेद वेदों की मान्यता एवं अमान्यता पर आधारित है। फलत: सभी आस्तिक दर्शन वेदों को न केवल प्रमाण, अपितु 'स्वत: प्रमाण' स्वीकार करते हैं; जबकि नास्तिक दर्शनों को वेदों का किसी प्रकार का प्रमाण तक भी स्वीकार नहीं। इसलिए आस्तिक-नास्तिक दर्शनों के प्रतिपाद्य सिद्धान्तों में अनेकत्र भेद का होना स्वाभाविक है; परन्तु जब आस्तिक दर्शनों में भी परस्पर भेदमूलक मान्यताएं सम्मुख आती हैं, तो यह बड़ा असमंजस-सा प्रतीत होता है।

महर्षि दयानन्द को अपने काल में सर्वसाधारण समाज की तथा समाज में मूर्धन्य समझे जाने वाले विशिष्ट अंगों की भी गिरती हुई दशा को सुधार की ओर परिवर्तित करने के लिए सभी तरह के व्यक्तियों के साथ जूझना पड़ा, उसने देखा, कि शास्त्रीय चर्चाओं में विद्वान समझे जाने वाले व्यक्ति भी बाद आदि कथाओं में दार्शनिक पद्धति की कितनी उच्छृंखलता के साथ अवहेलना करते हैं। दार्शनिक तथ्यों को अपने निराधार मनघड़ंत विचारों के अनुसार तोड़-मरोड़ कर निर्लज्जता से जनता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। मूल दर्शनों की संस्थापना करने वालों को भी एक दूसरे का विरोधी बताते हैं, क्या साक्षात्कृतधर्मा ऋषि-मुनियों का कथन परस्पर विरुद्ध माना जा सकता है? सत्य सदा एक होता है, सत्य के दो रूप नहीं हो सकते, तब क्या दर्शनों में उन ऋषि-मुनियों ने सत्य का उत्पादन न कर असत्य को प्रस्तुत किया जाए? ऋषि ने दर्शनों की इस दुर्दशा को गहराई के साथ अंतर्दृष्टि से देखा-परखा और एक सूत्र खोज निकाला, जिसमें सब दर्शन-माला में मोतियों के समान गुंथे हुए हैं।

सभी दर्शनों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय सृष्टि प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत करना है। निश्चित है, सृष्टि की रचना का प्रकार एक ही हो सकता है। ऐसी कल्पना सर्वथा निराधार होगी, सर्गादिकाल में अपने अव्यक्त कारणों से विश्व की रचना के प्रकार अनेक हों, और एक-दूसरे से भिन्न हों। इसलिए दर्शनों के जिन व्याख्याकारों ने दर्शनों में विश्व के विभिन्न उपादान कारणों का एवं उनसे उत्पाद्यमान विश्व की विभिन्न रचना-प्रक्रिया का उल्लेख उभारा है, वह संगत नहीं कहा जा सकता है। इसको वास्तविक रूप से समझने और इसके समन्वय के लिए ऋषि ने अपने अमर-ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में वह सूत्र इस प्रकार प्रस्तुत किया है- '(पूर्वपक्ष) जैसे सत्यासत्य और दूसरे ग्रन्थों का परस्पर विरोध है वैसे अन्य शास्त्रों में भी है। जैसा सृष्टिविषय में छह शास्त्रों का विरोध है। मीमांसा कर्म, वैशेषिक काल, न्याय परमाणु, योग पुरुषार्थ, सांख्य प्रकृति और वेदांत ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है; क्या यह विरोध नहीं है? (उत्तरपक्ष) प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी और इनमें विरोध नहीं, क्योंकि तुमको विरोधाविरोध का ज्ञान नहीं। मैं तुमसे पूछता हूं कि विरोध किस स्थल में होता है? क्या एक विषय में अथवा भिन्न-भिन्न विषयों में? (पूर्वपक्ष) एक विषय में अनेकों का परस्पर विरुद्ध कथन हो, उसको विरोध कहते हैं, यहां भी सृष्टि का एक ही विषय है। (उत्तरपक्ष) क्या विद्या एक या दो? (पूर्वोपक्ष) एक है। (उत्तरपक्ष) जो एक है तो व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिष आदि का भिन्न-भिन्न क्यों है? जैसा एक विद्या में अनेक अवयवों का एक-दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न-भिन्न छह अवयवों का शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, विचार, संयोग-वियोग आदि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण कारण है; वैसे ही सृष्टि का जो कर्म कारण है, उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्वों के अनुक्रम

से परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्तकारण जो परमेश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं। जैसे वैद्यक शास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधिदान और पथ्य के प्रकरण भिन्न-भिन्न कथित हैं, परन्तु सबका सिद्धान्त रोग की निवृत्ति है, वैसे ही सृष्टि के छह कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ भी विरोध नहीं। इसकी विशेष व्याख्या सृष्टि प्रकरण में कहेंगे।'

एवमेव पूर्व निर्देशानुसार इस विषय को अष्टम समुल्लास के सृष्टि प्रकरण-प्रसंग में इस प्रकार बताया है- सृष्टि विषय में वेदादि शास्त्रों का अवरोध है व विरोध? अविरोध है। जो अविरोधी है तो- तस्माद्वा एत्तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः, आकाशाद्वायुः, वायोरग्निः, अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या ओषधयः, ओषधिभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेतः रेतसः पुरुषः स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः।। यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वचन है। उस परमेश्वर और प्रकृति से आकाश अवकाश अर्थात् जो कारणरूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था उस को इकट्ठा करने से अवकाश उत्पन्न सा होता है। वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि विना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहां ठहर सकें? आकाश के पश्चात् वायु, वायु के पश्चात् अग्नि, अग्नि के पश्चात् जल, जल के पश्चात् पृथिवी, पृथिवी से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होता है। यहां आकाशादि क्रम से और छान्दोग्य में अग्न्यादि; ऐतरेय में जलादि क्रम से सृष्टि हुई। वेदों में कहीं पुरुष, कहीं हिरण्यगर्भ आदि से मीमांसा में कर्म, वैशेषिक काल, न्याय में परमाणु, योग में पुरुषार्थ, सांख्य में प्रकृति और वेदान्त में ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानी है। अब किसको सच्चा और किसको झूठा मानें?

इसमें सब सच्चे, कोई झूठा नहीं। झूठा वह है जो विपरीत समझता है, क्योंकि परमेश्वर निमित्त और प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। छह शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है। मीमांसा में- 'ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिस के बनाने में कर्मचेष्टा न की जाय। वैशेषिक में- समय न लगे विना बने ही नहीं। न्याय में- उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता। योग में- विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाय तो नहीं बन सकता। सांख्य में- तत्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता। और वेदान्त में- बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न हो न सके। इसलिये सृष्टि छह कारणों से बनती है; उन छह कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है, इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं?'

उक्त सन्दर्भों द्वारा भारतीय दर्शनों में अविरोध प्रकट करने के लिए ऋषि ने जो सूत्र सुझाया, उसका तात्पर्य केवल इतना है कि दर्शनों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय-सृष्टि प्रक्रिया अर्थात् सर्ग रचना के विभिन्न कारण रूप अंगों का उत्पादन एक-एक दर्शन में हुआ है, इसलिए प्रत्येक दर्शन परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं। सर्ग रचना रूप एक ही अर्थ का विवरण प्रस्तुत करने में सबका तात्पर्य है। सर्ग रचना के प्रसंग से सर्ग के स्त्रष्टा परमात्मा का तथा भोक्ता जीवात्मा का विशद वर्णन भी दर्शनों के प्रतिपाद्य विषय में आ जाता है। इसी क्रम से भोक्ता जीवात्मा के भोग साधन देह इन्द्रिय आदि का विवरण प्रसंगानुसार दर्शनों में प्रस्तुत किया गया है।

मीमांसा- शास्त्र में कर्मों का वर्णन है। ये कर्म ऐहिक एवं पारलौकिक फलों के उत्पादक हैं। सामाजिक अथवा मानवीय दृष्टि से यह कर्म यज्ञ-अनुष्ठान रूप हैं और मानव के एवं प्राणिमात्र के अभ्युदय तथा सुख-सुविधा व अनुकूलता का साधन समझा जाता है। गहन शास्त्रीय दृष्टि से विचारने से प्रतीत होता है, यह कर्म समस्त विश्व में अनुस्यूत हैं; उस कर्म व क्रिया को प्रतीक रूप में प्राणी के अभ्युदय के लिए प्रस्तुत शास्त्र में संकलित किया गया। इससे पूर्व भी यह सब अनुष्ठान ऋषियों द्वारा बोधित मानव समाज में क्रमानुक्रमपूर्वक चले आते हैं। सृष्टि-रचना में इनके अनुषक्त होने की भावना शास्त्र द्वारा अनेक प्रकार से प्रकट हो गई है। इस रूप में जगत्स्त्रष्टा की भावना को उपनिषद् यह कहकर प्रकट करते हैं- 'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्, नान्यत् किञ्चन मिषत्। स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति। स इमांल्लोका नष्टजत।'

महर्षि दयानन्द को अपने काल में सर्वसाधारण समाज की तथा समाज में मूर्धन्य समझे जाने वाले विशिष्ट अंगों की भी गिरती हुई दशा को सुधार की ओर परिवर्तित करने के लिए सभी तरह के व्यक्तियों के साथ जूझना पड़ा, उसने देखा, कि शास्त्रीय चर्चाओं में विद्वान समझे जाने वाले व्यक्ति भी बाद आदि कथाओं में दार्शनिक पद्धति की कितनी उच्छृंखलता के साथ अवहेलना करते हैं। दार्शनिक तथ्यों को अपने निराधार मनघड़ंत विचारों के अनुसार तोड़-मरोड़ कर निर्लज्जता से जनता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

चार वेद-चार वाक्य

पं. देवनारायण भारद्वाज

ब्रह्म की विद्या 'ब्रह्म' अर्थात वेद ही है। चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद इनमें चार विषय क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान हैं। यहां एक-एक वेद से एक-एक वाक्य प्रस्तुत किया जा रहा है-

1. मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् (ऋग्वेद 10.53.6)-ऋग्वेद तृण से लेकर परमब्रह्म तक का ज्ञान कराता है। उसके ज्ञान का मूलभूत सारतत्व यही है कि हे मनुष्य तू स्वयं सच्चा मनुष्य बन तथा दिव्य गुणयुक्त संतानों को जन्म दे अर्थात् सुयोग्य मानवों के निर्माण में सतत् प्रयत्नशील रहा। मनुष्य, मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसमें पशुताओं का प्रवेश न हो। आकार, रूप, रंग से कोई प्राणी मनुष्य दिखाई देता है, किन्तु उसके अंदर भेड़िया, श्वान, उल्लू गृद्ध आदि आकर अपना डेरा जमा लेते हैं। ऋग्वेद हमें वह सब ज्ञान प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति एक प्रबुद्ध मानव रहता है, वह न पशु और न दानव बनने पाता है।

2. आयुर्यज्ञेन कल्पताम् (यजुर्वेद 18.29)- तांबे का कोई भी तार प्रकाश नहीं कर सकता है, किन्तु जब उसमें विद्युत का प्रवाह होने लगता है तो उससे प्रकाश, गति, उर्जा ओर ध्वनि सभी प्राप्त होने लगते हैं। देखने में तार पहले जैसा ही लगता है। इसी प्रकार देखने में सभी मनुष्य एक से लगते हैं, किन्तु जिनमें यज्ञरूपी विद्युत का प्रवाह हो जाता है, वही दिव्य हो जाते हैं। पंच महायज्ञ की बात तो पृथक ही है। सामान्यतया यज्ञ से तीन कर्मों का बोध प्राप्त होता है-देवपूजा, संगतिकरण और दान। सभी सच्चे जड़-चेतन देवताओं के प्रति पूजा-भाव रखते हुए समाज में समन्वय-संगति बनाये रखने के लिए सर्वसुलभ संपदाओं को सुविधानुसार दान करना और कराना, यही सब कार्य यज्ञ कहलाते हैं। यही कर्म मनुष्य को महामानव बना देते हैं। आहार, निद्रा, भय व मैथुन तो हर पशु तथा मानव की आवश्यकता है।

पशु केवल इन्हीं के लिए जीता है। किन्तु मनुष्य इनसे ऊपर उठता है। इनको भी धर्म के कर्म अर्थात् यज्ञ का रूप प्रदान करता हुआ जीता भी है और बलिदान भी हो जाता है। अगर हमने किसी को प्रेम नहीं दिया, किसी की सेवा नहीं की, किसी की पीठ नहीं थपथपाई, किसी को सहारा नहीं दिया, किसी को सांत्वना नहीं दी, तो हमारा जीवन व्यर्थ है, निरर्थक है, एक व्यथा है। अयोग्य हैं हम। केवल अपने लिए जी रहे हैं, यह तो पशु का जीवन है। यही पशु प्रवृत्ति है कि केवल अपना ही ध्यान रखे। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

3. सदावृधः सखा (सामवेद 169-682)- इस यज्ञ भावना, कामना एवं कर्मणा को हम सामवेद के इस उपासना परक मंत्र से प्राप्त कर सकते हैं। हम सदैव उन व्यक्तियों को अपना मित्र बनायें, जो अपने क्षेत्र में बढ़े हुए हैं, वृद्ध हैं। उनकी सद्संगति से, उनके वचन व उनके अनुकरण से पढ़े-बेपढ़े सभी को सद्ज्ञान-सद्कर्म की प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी। उनके समीप बने रहने से मानव में यज्ञ की विद्युत का प्रवाह संचार करता रहेगा, जो इस लोक में तो उपयोगी होगा ही, परलोक में भी 'सदावृद्धः' जो आदि से ही सर्व वृद्धिपूर्ण परमब्रह्मा है, उसका भी सखा बना देगा, समान ख्याति का अधिकारी बना देगा। बड़ों की समीपता व उनका सम्मान सदैव आयु, विद्या, यश एवं बल का स्रोत होता है। इससे कोई वंचित न हो, अपितु सब सिंचित हों। यही वेद का मधुर सामगान है।

4. माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः (अथर्ववेद 12.1.12)- ज्ञान, कर्म, उपासना इन अवयवों के समन्वित रूप से निर्मित रसायन ही अथर्ववेद का विज्ञान है। पश्चिम प्रभावित विज्ञान अपने आविष्कारों से अति विचित्र यंत्र-उपकरणों का निर्माण कर सकता है। कम्प्यूटर, दूरदर्शन, दूरभाष, इंटरनेट और न जाने क्या क्या। इन सबसे भौतिक सुख समृद्धि का विस्तार तो होता दिखाई देता है, किन्तु आंतरिक शांति तिरोहित हो जाती है। आविष्कार तो अत्यंत विस्यमकारक अद्भुत लगते हैं, किंतु इन सबका प्रारम्भ प्रीतिकर, किंतु परिणाम प्राणहर सिद्ध होता है। आधुनिक भोगवादी विज्ञान के चमत्कार चीत्कार में नित्य परिणत होते देखे जाते हैं। इनमें सर्वाधिक स्थूल पृथ्वी है, जो सम्पूर्ण प्रकृति का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करती है। वेद के अनुसार यह हमारी सृजन-पालन व आधार देने वाली माता है, साथ ही हम इसके पुत्र हैं। इसके साथ हमारा व्यवहार माता-पुत्र की भांति होना चाहिए। माता यदि जन्म देकर संतान का पालन पोषण करती है, तो संतान भी माता का सम्मान और उसकी सेवा में अपने जीवन की बाजी लगाने को प्रस्तुत रहती है। आज की भांति सागर,

धरातल, पर्वत, आकाश में पाये जाने वाले पदार्थ यथा रत्न, राशि, जल, वृक्ष-वनस्पति, पत्थर, वायु सभी का भरपूर दोहन करना ही मानव का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। दोहन भी ऐसा कि इन प्राकृतिक पदार्थों का समूल विनाश होता चला जाये तथा पर्यावरण भयंकर रूप से प्रदूषित हो जाए प्रतिदिन सोने का एक अंडा देने वाली मुर्गी से संतुष्ट न होकर एक बार में ही मुर्गी के पेट को फाड़कर सोने के सारे अंडे एक साथ निकालने वालों को सोना तो मिलता ही नहीं, मुर्गी से भी हाथ धोना पड़ता है।

भूमि की भांति मानव की अन्य मातायें भी हैं। उनमें से एक माता गाय भी है। उसके पोषणकारी स्वर्णिम दुग्ध से जब जी न भरा तो मानव ने उसके मांस को ही खाना प्रारम्भ कर दिया। कृत्रिम विषैले दूध से मानव संतान रोग ग्रस्त होती है, उधर हजारों वधशालाओं में गौओं की हत्या करके गोमांस को भारत से निर्यात किया जाता है। दिल्ली के भोजन गृहों में गोमांस परोसे जाने के विरोध में जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया गया, वह भी मुस्लिम समुदाय के जागरूक व्यक्तियों के द्वारा। अमेरिका में शेर के मांस को परोसे जाने पर लोगों द्वारा आपत्ति की गई। यह तो समझ में आता है कि गाय को अंगूर, अन्न, मेवा खिलाकर अधिक गुणवत्ता पूर्ण दुग्ध प्राप्त किया जाए, किंतु यह समझ में नहीं आता है कि शाकाहारी पशु गाय के अधिक मांस को प्राप्त करने के लिए उसे धोखे से चारे में मांस मिला कर खिला दिया जाये। इस अस्वाभाविक क्रियाकलाप से जब 'मैडकाव' बीमारी से मनुष्य प्रभावित हुए, तो बड़ी संख्या में उन गायों को मार कर अपनी जान बचायी। इतना भोगते हुए भी वनस्पतियों की स्वाभाविक प्रोटीन से अतृप्त मानव इनके जनन गुण सूत्र में जंतुओं की प्रोटीन प्रविष्ट करके न जाने और कौन सी असाध्य व्याधि बुलाना चाहता है। यह है कभी न पूरी होने वाली मनुष्य की हत्यारी हवश !

अथर्ववेद इस हवश पर नियंत्रण करके 'वरदा वेदमाता' के ऐसे विज्ञान की प्रेरणा देता है, जिससे मानव को जीते जी आयु, प्राणशक्ति, प्रजा, पशु, कीर्ति एवं ब्रह्मवर्चस्व तो मिलें ही, मरने के बाद ब्रह्मलोक का दिव्य आनंद भी मिले। ऋग्वेद के ज्ञान के पदों से धर्म का बोध होता है। यजुर्वेद के कर्म सृजित अर्थ से मिलकर पद से पदार्थ बन जाते हैं। सामवेद की सात्विक कामनाओं से यह पदार्थ जगहितार्थ समर्पित हो जाते हैं।

श्री कृष्ण कौन थे, कैसे थे

योगेश्वर श्रीकृष्ण को राधा के साथ जोड़ना, अश्लीलता भरा वर्णन करना, प्रेमलीला रासलीला दिखाना, सोलह हजार एक सौ आठ गोपियों से शादी करना मूर्खता है भेड़चाल है। कोई बुद्धिजीवी प्रश्न उठा दे तो उसे मुल्ला-मुल्ला कहकर अपने क्रोध को शांत कर लेंगे परंतु गलत मान्यताओं को कभी न छोडेंगे। अरे कृष्ण के साथ राधा का नाम जोड़ कर आप खुद ही योगेश्वर को गाली दे रहे हो और गर्व महसूस करते हो। योगीराज धर्म संस्थापक थे, श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र में कहीं भी कलंक नहीं है, वे संदीपनी ऋषि के आश्रम में शिक्षा-दीक्षा लिए तो रासलीला रचाने गोपियों और राधा के बीच कब आ गए? अपनी बुद्धि खोलो और विचारो। श्रीकृष्ण वेदों और योग के ज्ञाता थे। उनके जीवन पर कलंक मत लगाओ जागो, कब तक सोते रहोगे? श्रीकृष्ण सम्पूर्ण ऐश्वर्य के स्वामी थे, दयालु थे, योगी थे, वेदों के ज्ञाता थे। वेद ज्ञाता न होते तो विश्वप्रसिद्ध 'गीता का उपदेश' न देते।

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी मात्र एक विवाह रुक्मिणी से किये और विवाह पश्चात् भी बारह वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन किया। तत्पश्चात् प्रद्युम्न नाम का पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। ऐसे योगी महापुरुष को रासलीला रचाने वाले, छलिया, चूड़ी बेचने वाला, सोलह लाख शादियां करने वाला आदि लांछन लगाते शर्म आनी चाहिए। अपने महापुरुषों को जानो! कब तक ऐसी मूर्खता दिखाओगे। जिस श्रीकृष्ण का नाम तुम लोग राधा के साथ जोड़ते हो जान लो राधा क्या थी- राधा का नाम पुराणों में आता है। सम्पूर्ण महाभारत में केवल कर्ण का पालन करने वाली मां राधा को छोड़कर इस काल्पनिक राधा का नाम नहीं है, भागवत् पुराण में श्रीकृष्ण की बहुत सी लीलाओं का वर्णन है, पर यह राधा वहां भी नहीं है। राधा का वर्णन मुख्य रूप से ब्रह्मवैवर्त पुराण में आया है। यह पुराण वास्तव में कामशास्त्र है, जिसमें श्रीकृष्ण राधा आदि की आड़ में लेखक ने अपनी काम पिपासा को शांत किया है, पर यहां भी मुख्य बात यह है कि इस एक ही ग्रंथ में श्रीकृष्ण के राधा के साथ भिन्न-भिन्न संबंध दर्शाये हैं, जो स्वत: ही राधा को काल्पनिक सिद्ध करते हैं। देखिये- ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखंड के पाँचवें अध्याय में श्लोक 25-26 के अनुसार राधा को कृष्ण की पुत्री सिद्ध किया है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण के वामपार्श्व से उत्पन्न हुई बताया है।

सामवेद उपासना तथा समरसता उत्पन्न करने वाला वेद है : दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

वैदिक विद्वान आचार्य आशीष दर्शनाचार्य ने वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में चल रहे सात दिवसीय सामवेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ के पश्चात अपने सम्बोधन में कहा कि हम सबको मिल बैठकर सामवेद की भावना के अनुसार संगीत व एकरसता को उत्पन्न करना चाहिये। हमें सामवेद को समझने का प्रयास भी करना चाहिये। सामवेद संगीत का वेद है जो जीवन में भक्ति संगीत को उत्पन्न करता है। मनुष्य वेदों के मंत्रों के सत्य अर्थों को जानकर जब उसके अनुसार प्रयत्न करता है तब वह सामवेद के अध्ययन में भी प्रवृत्त होता है। आचार्य जी ने श्रोताओं से पूछा कि साम-गान का आपने नाम सुना होगा परन्तु साम-गान होता क्या है? यह बहुत से वेद प्रेमियों को पता नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें सामवेद से परिचित होना चाहिये। इससे परिचित होने पर हम सामगान से भी परिचित हो सकेंगे। आचार्य जी ने कहा कि सामवेद का अर्थ जीवन में समता व सन्तुलन बनाना है। वह ज्ञान जिससे यह कार्य सम्पन्न होता है उस ज्ञान को सामवेद कहते हैं।

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी ने कहा कि जो ज्ञान जीवन में समरसता ले आये, जो जीवन में संतुलन स्थापित कर दे, वह ज्ञान सामवेद होता है। सामवेद शब्द की व्युत्पत्ति को भी संस्कृत व्याकरण के नियमों के अनुसार आचार्य जी ने समझाया। आचार्य जी ने आगे कहा कि ऐसा ज्ञान जो मन की अशान्ति व दुःख को हर ले, वह सामवेद कहलाता है। सामवेद का ज्ञान मन को ईश्वर भक्ति व प्रेम में स्थापित करता है। आचार्य जी ने कहा कि कुल चार वेद हैं जिसमें तीसरा वेद सामवेद है। यह वह सत्य ज्ञान है जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि काल में चार ऋषियों को दिया था। यह चार वेद वही ज्ञान है जिससे जीवन में समरसता तथा सन्तुलन उत्पन्न होता है। सामवेद के अध्ययन व अभ्यास से मनुष्य के मन की अशान्ति दूर हो जाती है और मन ईश्वर की भक्ति करने में प्रवृत्त होता है। ऐसे ज्ञान को सामवेद कहते हैं।

वेदों के विद्वान आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी ने बताया कि सामवेद में 1875 मंत्र हैं। उन्होंने कहा कि हर ग्रन्थ की एक रूपरेखा होती है। ऋषि दयानन्द लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की भी अपनी रूपरेखा है। सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ का आरम्भ भूमिका से होता है। इसके बाद 14 समुल्लास हैं तथा इसके अनंतर निष्कर्ष जिसे ग्रन्थ का सार भी कह सकते हैं, वह प्रस्तुत किया गया है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के निष्कर्ष को 51 परिभाषायें प्रस्तुत कर दिया है। इस निष्कर्ष को 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' कहते हैं। इसी प्रकार से हमें सामवेद की रूपरेखा को भी समझना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि सामवेद में आर्चिक हैं। उन्होंने कहा कि जिसका अध्ययन किया जाता है उन्हें अध्याय कहते हैं। पाठ उसे कहते हैं जिसे पढ़ा

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी ने कहा कि जो ज्ञान जीवन में समरसता ले आये, जो जीवन में संतुलन स्थापित कर दे, वह ज्ञान सामवेद होता है। सामवेद शब्द की व्युत्पत्ति को भी संस्कृत व्याकरण के नियमों के अनुसार आचार्य जी ने समझाया। आचार्य जी ने आगे कहा कि ऐसा ज्ञान जो मन की अशान्ति व दुःख को हर ले, वह सामवेद कहलाता है। सामवेद का ज्ञान मन को ईश्वर भक्ति व प्रेम में स्थापित करता है। आचार्य जी ने कहा कि कुल चार वेद हैं जिसमें तीसरा वेद सामवेद है। यह वह सत्य ज्ञान है जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि काल में चार ऋषियों को दिया था। यह चार वेद वही ज्ञान है जिससे जीवन में समरसता तथा सन्तुलन उत्पन्न होता है। सामवेद के अध्ययन व अभ्यास से मनुष्य के मन की अशान्ति दूर हो जाती है और मन ईश्वर की भक्ति करने में प्रवृत्त होता है। ऐसे ज्ञान को सामवेद कहते हैं। उन्होंने कहा कि हर ग्रन्थ की एक रूपरेखा होती है। ऋषि दयानन्द लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की भी अपनी रूपरेखा है। सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ का आरम्भ भूमिका से होता है। इसके बाद 14 समुल्लास हैं तथा इसके अनंतर निष्कर्ष जिसे ग्रन्थ का सार भी कह सकते हैं, वह प्रस्तुत किया गया है।

जाता है। समुल्लास उसे कहते हैं जो प्रसन्नता व उल्लास उत्पन्न करता है। सत्यार्थप्रकाश के समुल्लास प्रश्नोत्तर की शैली में हैं। जो प्रश्न समय समय पर हमारे मन में उठते रहते हैं परन्तु जिनका अन्यत्र समाधान नहीं होता, उनका उत्तर हमें सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में मिलता है।

दर्शनों के आचार्य आशीष जी ने कहा कि मनुष्य को सत्य जानने की जिज्ञासा होती है। मनुष्य के जीवन में संशयों का होना सामान्य बात है। उन्होंने कहा कि संशय रूपी सीढ़ी को जो ठीक से पार कर लेता है वह निःशंक होकर सत्य ज्ञान को प्राप्त होता है। जब हम किसी विषय का अध्ययन करते हैं तो हमें उस विषय में कुछ शंकाएं होती हैं। इसे दूर करने के लिये हमें विषय की गहराई में जाना पड़ता है। ऐसा करके हमारे संशय कम होते हैं व कुछ शेष रह जाते हैं। इनका निवारण वेद व सत्यार्थप्रकाश जैसे सद्ज्ञान के ग्रन्थों से होता है। संशय होने पर हम उनका समाधान ढूंढते हैं। इससे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं। संशयों को दूर करना मनुष्यों के लिए आवश्यक होता है। गीता नामक ग्रन्थ में कहा गया कि जिस मनुष्यों को संशय होते हैं परन्तु उसको उनका समाधान प्राप्त नहीं होता, वह मनुष्य नष्ट हो जाता है। ऋषि दयानन्द लिखित सत्यार्थप्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ हैं जिसमें हमें अपने प्रायः सभी संशयों का समाधान मिलता है। संशयों के उत्तर हमारे हृदय व आत्मा में उल्लास पैदा करते हैं। ऐसा ही उल्लास हमें सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से प्राप्त होता है। इसी कारण से ऋषि दयानन्द ने अध्याय या पाठ के स्थान पर समुल्लास शब्द का प्रयोग किया है।

आचार्य आशीष जी ने कहा कि सामवेद में प्रयुक्त होने वाले 'आर्चिक' शब्द को भी हमें समझना है। उन्होंने कहा कि वेदमन्त्रों को ऋचा कहते हैं। ऋचा शब्द से ही आर्चिक शब्द बना है। आर्चिक ऋचाओं व मंत्रों का समूह होता है। आचार्य जी ने कहा कि सामवेद में तीन आर्चिक हैं जिनके नाम हैं पूर्वाचिक, महानाम्नी आर्चिक तथा उत्तरार्चिक। महानाम्नी आर्चिक में मात्र 10 वेद मन्त्र ही हैं। सामवेद भक्ति तथा उपासना विषयों का वेद हैं। आचार्य जी ने सामवेद के प्रथम मन्त्र का उल्लेख किया और बताया कि सामवेद का प्रथम मंत्र है 'अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि' उन्होंने कहा कि हम सबको यह पूरा मंत्र अथवा इसके प्रथम तीन पद 'अग्न आ याहि' तो स्मरण होने ही चाहिए। आचार्य जी ने कहा कि मनुष्य को परीक्षा के भय से ऊपर उठना चाहिये। उन्होंने कहा कि जब श्रोताओं को वक्ता यह कहते हैं कि वह जो विषय प्रस्तुत कर रहे हैं उस पर वह बाद में प्रश्न पूछेंगे तो इससे श्रोता भयभीत हो जाते हैं। आचार्य जी ने कहा कि सामवेद का अध्ययन करने वाले मनुष्यों का भय समाप्त होता है और उनमें समरसता आती है। उन्होंने कहा कि सामवेद मन की अशान्ति को दूर कर मनुष्य को परमात्मा की भक्ति में लगाता है। हमें अपने मन की अशान्ति को दूर करने के लिये सामवेद का अध्ययन करना होगा।

आचार्य जी ने कहा कि जब मन की स्थिति बाहरी बातों पर निर्भर करती है तो उसे सांसारिक अवस्था कहा जाता है। जिस मनुष्य के मन पर बाहरी बातों का प्रभाव नहीं पड़ता अपितु वह अपनी आत्मा पर निर्भर होता है, उस स्थिति को मन की आध्यात्मिक स्थिति व दशा कहलाती है। मन को जैसा चाहें वैसा रखने की स्थिति को मन की आध्यात्मिक अवस्था कहते हैं। आचार्य जी ने बताया कि पूर्वार्चिक में चार पर्व या खंड हैं। पर्व जोड़ को कहते हैं। इसके लिये बांस का उदाहरण दिया। बांस में अनेक पर्व वा ग्रन्थियां होती है। सामवेद का प्रथम पर्व आग्नेय पर्व है। आग्नेय शब्द अग्नि शब्द से जुड़ा हुआ है। इस पर्व के मन्त्रों का विषय जिसे देवता कहते हैं, वह अग्नि है। आचार्य जी ने स्पष्ट किया कि मंत्र के विषय या सब्जेक्ट को मंत्र का देवता कहते हैं। इसी के साथ आचार्य जी ने अपना व्याख्यान समाप्त किया।

अनमोल वचन

- स्वामी दयानन्द एक विद्वान थे। उनके धर्म नियमों की नींव ईश्वर कृत वेदों पर थी। उन्हें वेद कंठस्थ थे उनके मन और मस्तिक में वेदों ने घर किया हुआ था। संस्कृत व्याकरण का एक ही बड़ा विद्वान साहित्य का पुतला, वेदों के महत्व को समझने वाला अत्यंत प्रबल नैयायिक और विचारक यदि भारत में हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था। **–मैक्स मूलर**
- महर्षि दयानन्द इतने अच्छे और विद्वान आदमी थे कि प्रत्येक मत के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे। **–सर सैयद अहमद खां**
- मेरा सादर प्रणाम है उस महान गुरु दयानन्द को जिनके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं। **–रवीन्द्रनाथ टैगोर**

महाभारत का एक प्रसंग जो अंतर्मन को छूता है

महाभारत युद्ध समाप्त हो चुका था। युद्धभूमि में यत्र-तत्र योद्धाओं के फटे वस्त्र, मुकुट, टूटे शस्त्र, टूटे रथों के चक्के, छज्जे आदि बिखरे हुए थे और वायुमंडल में पसरी हुई थी घोर उदासी! गिद्ध, कुत्ते, सियारों की उदास और डरावनी आवाजों के बीच निर्जन हो चुकी उस भूमि में द्वापर का सबसे महान योद्धा 'देवव्रत' (भीष्म पितामह) शरशय्या पर पड़ा सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा कर रहा था- अकेला।

तभी उनके कानों में एक परिचित ध्वनि शहद घोलती हुई पहुंची, 'प्रणाम पितामह।' भीष्म के सूख चुके अधरों पर एक मरी हुई मुस्कुराहट तैर उठी, बोले 'आओ देवकीनंदन! स्वागत है तुम्हारा! मैं बहुत देर से तुम्हारा ही स्मरण कर रहा था।' कृष्ण बोले, 'क्या कहूं पितामह! अब तो यह भी नहीं पूछ सकता कि कैसे हैं आप।' भीष्म चुप रहे, कुछ क्षण बाद बोले, पुत्र युधिष्ठिर का राज्याभिषेक करा चुके केशव?

उनका ध्यान रखना, परिवार के बुजुर्गों से रिक्त हो चुके राजप्रासाद में उन्हें अब सबसे अधिक तुम्हारी ही आवश्यकता है। कृष्ण चुप रहे! भीष्म ने पुन: कहा 'कुछ पूछूं केशव? बड़े अच्छे समय से आये हो। सम्भवत: धरा छोड़ने के पूर्व मेरे अनेक भ्रम समाप्त हो जाय।

कृष्ण बोले- कहिये न पितामह! एक बात बताओ प्रभु! तुम तो ईश्वर हो न? कृष्ण ने बीच में ही टोका, 'नहीं पितामह! मैं ईश्वर नहीं-मैं तो आपका पौत्र हूं पितामह... ईश्वर नहीं।' भीष्म उस घोर पीड़ा में भी ठठा के हंस पड़े। बोले- अपने जीवन का स्वयं कभी आकलन नहीं कर पाया कृष्ण, सो नहीं जानता कि अच्छा रहा या बुरा, पर अब तो इस धरा से जा रहा हूं कन्हैया, अब तो ठगना छोड़ दे रे। कृष्ण जाने क्यों भीष्म के पास सरक आये और उनका हाथ पकड़ कर बोले-कहिये पितामह। भीष्म बोले- एक बात बताओ कन्हैया! इस युद्ध में जो हुआ वो ठीक था क्या? किसकी ओर से पितामह? पांडवों की ओर से?

कौरवों के कृत्यों पर चर्चा का तो अब कोई अर्थ ही नहीं कन्हैया! पर क्या पांडवों की ओर से जो हुआ वो सही था? आचार्य द्रोण का वध, दुर्योधन की जंघा के नीचे प्रहार, दु:शासन की छाती का चीरा जाना, जयद्रथ के साथ हुआ छल, निहत्थे कर्ण का वध, सब ठीक था क्या? यह सब उचित था क्या?

इसका उत्तर मैं कैसे दे सकता हूं पितामह। इसका उत्तर तो उन्हें देना चाहिए जिन्होंने यह किया। उत्तर दें दुर्योधन का वध करने वाले भीम, उत्तर दें कर्ण और जयद्रथ का वध करने वाले अर्जुन। मैं तो इस युद्ध में कहीं था ही नहीं पितामह। अभी भी छलना नहीं छोड़ोगे कृष्ण? अरे विश्व भले कहता रहे कि महाभारत को अर्जुन और भीम ने जीता है, पर मैं जानता हूं कन्हैया कि यह तुम्हारी और केवल तुम्हारी विजय है। मैं तो उत्तर तुम्ही से पूछूंगा कृष्ण। 'तो सुनिए पितामह।' कुछ बुरा नहीं हुआ, कुछ अनैतिक नहीं हुआ। वही हुआ जो हो होना चाहिए।

यह तुम कह रहे हो केशव? मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अवतार कृष्ण कह रहा है? यह छल तो किसी युग में हमारे सनातन संस्कारों का अंग नहीं रहा, फिर यह उचित कैसे गया? 'इतिहास से शिक्षा ली जाती है पितामह, पर निर्णय वर्तमान की परिस्थितियों के आधार पर लेना पड़ता है। हर युग अपने तर्कों और अपनी आवश्यकता के आधार पर अपना नायक चुनता है...! राम त्रेता युग के नायक थे, मेरे भाग में द्वापर आया था। हम दोनों का निर्णय एक सा नहीं हो सकता पितामह। नहीं समझ पाया कृष्ण! तनिक समझाओ तो! राम और कृष्ण की परिस्थितियों में बहुत अंतर है पितामह! राम के युग में खलनायक भी 'रावण' जैसा शिवभक्त होता था।

तब रावण जैसी नकारात्मक शक्ति के परिवार में भी विभीषण जैसे सन्त हुआ करते थे। तब बाली जैसे खलनायक के परिवार में भी तारा जैसी विदुषी स्त्रियां और अंगद जैसे सज्जन पुत्र होते थे। उस युग में खलनायक भी धर्म का ज्ञान रखता था।

इसलिए राम ने उनके साथ कहीं छल नहीं किया। किंतु मेरे युग के भाग में में कंस, जरासंध, दुर्योधन, दु:शासन, शकुनी, जयद्रथ जैसे घोर पापी आये हैं। उनकी समाप्ति के लिए हर छल उचित है पितामह। पाप का अंत आवश्यक है पितामह, वह चाहे जिस विधि से हो।

तो क्या तुम्हारे इन निर्णयों से गलत परम्पराएं नहीं प्रारम्भ होंगी केशव? क्या भविष्य तुम्हारे इन छलों का अनुशरण नहीं करेगा? और यदि करेगा तो क्या यह उचित होगा? भविष्य तो इससे भी अधिक नकारात्मक आ रहा है पितामह। कलियुग में तो इतने से भी काम नहीं चलेगा....!! वहां मनुष्य को कृष्ण से भी अधिक कठोर होना होगा, नहीं तो धर्म समाप्त हो जाएगा। जब क्रूर और अनैतिक शक्तियां सत्य एवं धर्म का समूल नाश करने के लिए आक्रमण कर रही हों, तो नैतिकता अर्थहीन हो जाती है पितामह। तब महत्वपूर्ण होती है विजय, केवल विजय!!

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

इह असारे खलु संसारे दु:खमहोदधौ निमग्ना अहर्निशम् असह्यादुखै: समुद्विग्ना अनल्पप्रयासै: तत्प्रतीकारोपायं कुर्वाणा: बहवो मानवा: दृष्टिगोचरताम् आयान्ति। कथं तेषां दु:खनिवृत्ति: स्यादिति विचार्य महीयांस: कवयो लोकोत्तरानन्दसन्दोहजनकतया चतुवर्गफलप्राप्त्युपायभूतां काव्यात्मिकां शाश्वतीं सृष्टिं व्यरीरचन्। प्रभुसम्मित-वेदादिशास्त्रेभ्य: सुहत्सम्मित-पुराणेतिहासेभ्यश्च विलक्षणा नवरसोपेता हृद्यां कान्तासम्मितेयं सुकवि कवितारूपिणो कविसृष्टि: कामिनीव सहृदयहृदयं प्रविश्य आनंदयति रसयति सुखयति मोहयति च तेषां मनांसि। अत एवोक्तम्-

चतुर्वर्गफलप्राप्ति: सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥

किन्नाम तावत्काव्यमिति 'लोकोत्तरवर्णनानि-पुणकविकर्म काव्यम्' इत्युक्तम्। तत्र भवति जिज्ञासा किमिदं काव्यत्वं शब्द-पर्याप्तम्, अर्थपर्याप्तम्, तदुभयपर्याप्तं वेति। तत्रार्थस्य काव्यत्वे तु वर्णनात्मकत्वादर्थ: काव्यं भवितुं नार्हति। न ह्यर्थ: कवे: कर्म, न केनापि कविना कोऽप्यर्थ: समुत्पाद्यतेऽत: शब्दनिष्ठैव कविकर्मता वाच्या। अत एवाग्निपुराणे- 'संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवछिन्ना पदावली काव्य' मिति काव्यलक्षणं प्रतिपादितम्। 'पदावली' चात्र शब्दसमूहात्मिकैवेति। दंडिनाऽपि इदमेव काव्यलक्षणं स्वीकृतम। अत एव शब्दनिष्ठता काव्यवादी साहित्यदर्पणकारों विश्वनाथोऽपि ध्वनिकारादिभि: निर्धारिते वस्त्वलङ्काररसरूपे त्रिविधे ध्वनौ काव्यात्मतत्त्वे रसध्वनिमेव काव्यात्मत्वेन स्वीकृत्य 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति काव्यलक्षणम् अंगीकरोति। इत: पूर्वमपि अग्निपुराणकारेण अपरैश्चापि विद्वभ्द: काव्ये रसस्यात्मता प्रतिपादिता। अग्निपुराणकारेण 'वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्' इति, आचार्यभरतेन च- 'तत्र रसानेवादाव भिव्याख्यास्याम:' 'नहि रसादृते कश्चिदर्थ: प्रवर्तते' इति वदता काव्ये रसस्य प्राधान्यं प्रतिपादितम्। अत एव तेषामनुशीलनं विधाय आचार्यविश्वनाथेनापि 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति स्वकीयं काव्यलक्षणं निर्धारित्तम्।

यदि च रसात्मकं वाक्यमेव काव्यम् तर्हि कोऽसौ रस: ? इति जिज्ञासायां छान्दोग्योपनिषदि च 'रसो वै स:, रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दीभवति' इत्यादिना ब्रह्मानन्दस्य रसरूपतया सच्चिदानन्दस्वरूपस्य ब्रह्मण: विवर्तमिदं जगदति कृत्या तदुद्बोधनार्थ महाकवे: प्रवृत्तिर्भवति। आचार्यभरतेनापि 'रस्यते आस्वाद्यते इति रस:' इति स्वीकृत्य आस्वादनीयं वाक्यमेव काव्यं स्वीक्रियते। एवं च रसान्वितं रसप्रधानं वा वाक्यं काव्यमिति फलितम्। ननु रसशब्देन आयुर्वेदशास्त्रेषु उपवर्णितानां मधुराम्ल-लवण-कटुकषायतिक्तादि रसानां पारदादिदरसानाश्च ग्रहणात्किमेतदायुवेंदोक्तं मधुरादि-रसप्रतिपादनपरं पारदादि-रसप्रतिपादनपरं वा वाक्यमपि काव्यं स्यादित्याशंक्य रसात्मकं वाक्यमिति शब्दे रसशब्देन रसभाव-रसाभास-भावाभास-भावोदय-भावशान्तिभावशबलतादीनामेव ग्रहणं भवतीति प्रतिपादितं काव्याशास्त्रे-

रसभावौ तदाभासौ भावस्य प्रशमोदयौ।
सन्धि: शबलता चेति सर्वेऽपि रसनाद्रसा:॥

श्री योगेश मुंजाल जी : ऋषि जन्मभूमि टंकारा के कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत

श्री योगेश मुंजाल जी स्व. श्री महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के बड़े पुत्र हैं और पिछले 15 वर्षों से टंकारा ट्रस्ट में ट्रस्टी के रूप में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इसी वर्ष हुई अर्द्धवार्षिक बैठक में आपको सर्वसम्मति से कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत किया गया। आप महात्मा सत्यानन्द जी द्वारा दिए गए संस्कारों के अनुसार ही केवल ऋषि जन्मभूमि ही नहीं आर्य समाज के क्षेत्र में कई संस्थाओं में अपना सहयोग दे रहे हैं। आपके अनुज भ्राता श्री सुरेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री उमेश मुंजाल, श्री महेश मुंजाल भी जहां अन्य सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय हैं वहीं आर्य समाज और ऋषि जन्मभूमि को अपना सहयोग दे रहे हैं। आपकी बहन श्रीमती नीलम जी प्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज को पूरा सहयोग एवं प्रतिदिन यज्ञ करती हैं। पूरा परिवार प्रतिदिन यज्ञ में सम्मिलित होता है, वहीं दूसरे महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के पौत्र नीरज एवं पौत्री निधि भी पूर्ण रूप से वैदिक मान्यताओं के प्रति समर्पित हैं। आप एक बड़े उद्योगपति हैं और आप मुंजाल शोभा के नाम से चार पहिया एवं दो पहिया गाड़ी के शौकर्स बनाने वाली कंपनी में सबसे प्रथम श्रेणी पर आते हैं, जिसमें हजारों की संख्या में कर्मचारी कार्यरत है। आपके उद्योग की शाखाएं हरिद्वार, गुरुग्राम एवं मानेसर (हरियाणा) में स्थापित है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा लुधियाना में हुई और तदोपरांत आपने आईआईटी रुड़की से आर्किटेक्चर इंजीनियर की शिक्षा प्राप्त की।

क्रांतिकारी खुदीराम बोस

जन्म : 3 दिसम्बर
शत्-शत् नमन

खुदीराम बोस भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे, जो स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे कम उम्र के क्रांतिकारी थे। खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर 1889 को हुआ था। खुदीराम बोस के पिता त्रिलोकनाथ बसु शहर में एक तहसीलदार थे और मां लक्ष्मीप्रिया देवी एक धार्मिक महिला थीं। खुदीराम बोस का जन्म स्थान मिदनापुर जिले के बहुवैनी, पश्चिम बंगाल में हुआ था। खुदीराम बोस भगवद् गीता में कर्म की धारणा से प्रभावित थे। भारत माता को ब्रिटिश शासन के चंगुल से आजाद करने के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए थे। 1905 में बंगाल के विभाजन ब्रिटिश राजनीति से असंतुष्ट, खुदीराम बोस क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं के साथ जुगंत पार्टी में शामिल हो गए। सोलह वर्ष की उम्र में, खुदीराम बोस ने पुलिस स्टेशनों के पास बम छोड़े और सरकारी अधिकारी को अपना निशाना बनाया। इन बम धमाकों के आरोप में खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर लिया गया। 3 अप्रैल 1908 में बोस और प्रफुल्ल चाकी ने बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के मुख्य प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड पर हमला करने की योजना बनाई। यूरोपीय क्लब के गेट से किंग्सफोर्ड की बग्घी आने का इंतजार कर रहे थे और खुदीराम बोस को किंग्सफोर्ड जैसी बग्घी सामने से आती हुई दिखाई दी, इन्होंने इस पर बम फेंक दिया। बोस द्वारा फेंके गए बम हमले के आरोप में, उन्हें 19 की उम्र में मौत की सजा सुनाई गई। खुदीराम बोस को 11 अगस्त 1908 को फांसी पर लटका दिया गया था।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

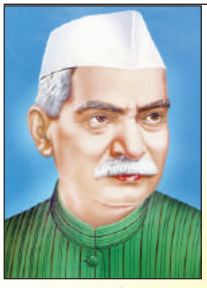

जन्म : 3 दिसम्बर
शत्-शत् नमन

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसम्बर 1884 को बिहार के एक छोटे से गांव जीरादेई में हुआ था। उनके पिता का नाम महादेव सहाय था जो संस्कृत एवं फारसी के विद्वान थे। माता कमलेश्वरी देवी एक धर्मपरायण महिला थीं। उनका विवाह बाल्य काल में ही, लगभग 13 वर्ष की उम्र में, राजवंशी देवी से हो गया। प्रारंभिक शिक्षा छपरा के जिला स्कूल में हुई। आगे की पढ़ाई उन्होंने पटना में जारी रखी। 1902 में कोलकाता के प्रसिद्ध प्रेसिडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया। 1915 में उन्होंने स्वर्ण पदक के साथ विधि परास्नातक की परीक्षा पास की और बाद में विधि के क्षेत्र में ही उन्होंने डॉक्ट्रेट की उपाधि भी हासिल की। डॉ प्रसाद भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में भी अपना योगदान दिया था। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। उन्होंने 12 वर्षों तक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करने के पश्चात वर्ष 1962 में अपने अवकाश की घोषणा की। देहांत 28 फरवरी 1963 में हुआ। उत्कृष्ट कार्यों के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 1962 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

अमर शहीद राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी

बलिदान : 17 दिस.
शत्-शत् नमन

बंगाल में पबना जिले के अंतर्गत मड़यां गांव में 29 जून 1901 के दिन क्षिति मोहन लाहिड़ी के घर राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी का जन्म हुआ। उनकी माता का नाम बसंत कुमारी था। उनके जन्म के समय पिता क्रांतिकारी क्षिति मोहन लाहिड़ी व बड़े भाई बंगाल में चल रही अनुशीलन दल की गुप्त गतिविधियों में योगदान देने के आरोप में कारावास की सलाखों के पीछे कैद थे। दिल में राष्ट्र-प्रेम की चिंगारी लेकर मात्र नौ वर्ष की आयु में ही वे बंगाल से अपने मामा के घर वाराणसी पहुंचे। वाराणसी में ही उनकी शिक्षा दीक्षा सम्पन्न हुई। काकोरी काण्ड के दौरान लाहिड़ी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इतिहास विषय में एमए (प्रथम वर्ष) के छात्र थे। 17 दिसम्बर 1927 को गोण्डा के जिला कारागार में अपने साथियों से दो दिन पहले उन्हें फांसी दे दी गयी। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को देश-प्रेम और निर्भीकता की भावना विरासत में मिली थी। राजेन्द्रनाथ काशी की धार्मिक नगरी में पढाई करने गये थे किन्तु संयोगवश वहां पहले से ही निवास कर रहे सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी शचींद्रनाथ सान्याल के सम्पर्क में आ गये। राजेन्द्र

की फौलादी दृढ़ता, देश-प्रेम और आजादी के प्रति दीवानगी के गुणों को पहचान कर शचीन दा ने उन्हें अपने साथ रखकर बनारस से निकलने वाली पत्रिका बंग वाणी के सम्पादन का दायित्व तो दिया ही, अनुशीलन समिति की वाराणसी शाखा के सशस्त्र विभाग का प्रभार भी सौंप दिया। उनकी कार्य कुशलता को देखते हुए उन्हें हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन की गुप्त बैठकों में आमंत्रित भी किया जाने लगा।

अमर शहीद अशफ़ाक़ उल्ला ख़ां

बलिदान : 19 दिस.
शत्-शत् नमन

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ां भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। उन्होंने काकोरी काण्ड में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटिश शासन ने उनके ऊपर अभियोग चलाया और 19 दिसम्बर 1927 को उन्हें फैजाबाद जेल में फांसी पर लटका कर मार दिया गया। राम प्रसाद बिस्मिल की भांति अशफ़ाक़ उल्ला ख़ां भी उर्दू भाषा के बेहतरीन शायर थे। उनका उर्दू तखल्लुस, जिसे हिन्दी में उपनाम कहते हैं, हसरत था। उर्दू के अतिरिक्त वे हिन्दी व अंग्रेजी में लेख एवं कवितायें भी लिखा करते थे। उनका पूरा नाम अशफ़ाक़ उल्ला ख़ां वारसी हसरत था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सम्पूर्ण इतिहास में बिस्मिल और अशफ़ाक़ की भूमिका निर्विवाद रूप से हिन्दू-मुस्लिम एकता का अनुपम आख्यान है। अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का जन्म उत्तर प्रदेश के शहीदगढ शाहजहांपुर में रेलवे स्टेशन के पास स्थित कदनखैल जलालनगर मुहल्ले में 22 अक्टूबर 1900 को हुआ था। उनके पिता का नाम मोहम्मद शफीक उल्ला ख़ां था। उनकी मां मजहूरुन्निशां बेगम बला की खूबसूरत खबातीनों (स्त्रियों) में गिनी जाती थीं। अशफ़ाक़ ने स्वयं अपनी डायरी में लिखा है कि जहां एक ओर उनके बाप-दादों के खानदान में एक भी ग्रेजुएट होने तक की तालीम न पा सका वहीं दूसरी ओर उनकी ननिहाल में सभी लोग उच्च शिक्षित थे। उनमें से कई तो डिप्टी कलेक्टर व एस.जे.एम. के ओहदों पर मुलाजिम भी रह चुके थे। 1857 के गदर में उन लोगों ने जब हिन्दुस्तान का साथ नहीं दिया तो जनता ने गुस्से में आकर उनकी आलीशान कोठी को आग के हवाले कर दिया था। वे हर समय इस प्रयास में रहते थे कि किसी ऐसे व्यक्ति से भेंट हो जाय जो क्रांतिकारी दल का सदस्य हो। जब मैनपुरी केस के दौरान उन्हें यह पता चला कि राम प्रसाद बिस्मिल उन्हीं के शहर के हैं तो वे उनसे मिलने की कोशिश करने लगे। धीरे धीरे वे राम प्रसाद 'बिस्मिल' के संपर्क में आये और बाद में उनके दल के भरोसेमंद साथी बन गए।

क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह

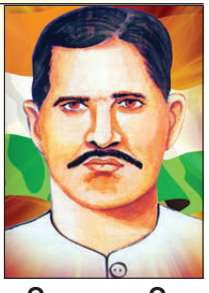

बलिदान : 19 दिस.
शत्-शत् नमन

रोशन सिंह एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्हें 1921-22 के असहयोग आंदोलन के समय बरेली शूटिंग केस में सजा सुनाई गयी थी। बरेली सेंट्रल जेल से रिहा होने के बाद 1924 में वे हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हो गये। जबकि काकोरी हत्या कांड में उनका हाथ नही था लेकिन फिर भी उन्हें गिरफ्तार किया गया और ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मौत की सजा सुनाई। क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहांपुर में स्थित गांव नबादा में 22 जनवरी 1892 को हुआ था। उनकी माता का नाम कौशल्या देवी और पिता का नाम ठाकुर जंगी सिंह था ठा. रोशन सिंह ने छह दिसंबर 1927 को इलाहाबाद नैनी जेल की काल कोठरी से अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था। एक सप्ताह के भीतर ही फांसी होगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप मेरे लिए रंज हरगिज न करें। दुनिया में बदफैली करके अपने को बदनाम न करें और मरते वक्त ईश्वर को याद रखें, यही दो बातें होनी चाहिए। ठाकुर रोशन सिंह 1929 के आस-पास 'असहयोग आन्दोलन' से पूरी तरह प्रभावित हो गए थे। वे देश सेवा की और झुके और अंतत: रामप्रसाद बिस्मिल के संपर्क में आकर क्रांतिपथ के यात्री बन गए। यह उनकी ब्रिटिश विरोधी और भारत भक्ति का ही प्रभाव था की वे बिस्मिल के साथ रहकर खतरनाक कामों में उत्साह पूर्वक भाग लेने लगे। ठाकुर साहब ने अपनी काल-कोठरी को प्रणाम किया और गीता हाथ में लेकर निर्विकार भाव से फांसी घर की ओर चल दिये। फांसी के फन्दे को चूमा फिर जोर से तीन वार वन्दे मातरम् का उद्घोष किया और वेद-मंत्र 'ओ३म् विश्वानि देव सवितुर दुरितानि परासुव यद भद्रम तन्नासुव' का जाप करते हुए फंदे से झूल गये।

क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल

इस संसार में अब तक अनगिनत आत्मकथाएं लिखी जा चुकी हैं तथा आगे भी लिखी जाती रहेंगी परंतु शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा जैसा गौरव शायद ही किसी को प्राप्त हो। '19 दिसम्बर 1927 ई. पौष कृष्ण 11 संवत् 1984 विक्रमी प्रातः साढ़े छह बजे इस शरीर को फांसी पर लटका देने की तिथि निश्चित हो चुकी थी। इस कोठरी में सुयोग प्राप्त हो गया है कि अपनी कुछ अंतिम बातें लिखकर देशवासियों को अर्पण कर दूं। संभव है मेरे जीवन के अध्ययन से किसी आत्मा का भला हो जाय।' काल कोठरी में बैठकर, फांसी लगने से मात्र कुछ घंटे पहले तक, उन्होंने आत्मकथा लिखकर एक इतिहास बना डाला तथा लिख भी डाला। धन्य हैं ऐसे वीर-मृत्यु के भय को जीत लेने वाले- ए भारत के नौजवान साथियों! क्या ये शहीद हमारे आदर्श नहीं होने चाहिए? आओ अब इस देश भक्त नौजवान के जीवनामृत का आचमन करें तथा उसके विचारों की कथा को श्रद्धाभाव से हृदयंगम करें।

बलिदान : 19 दिस.
शत्-शत् नमन

जन्म तथा शिक्षा : क्रांतिकारी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 11 संवत् 1954 विक्रमी (4 जून 1897 ई.) को शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर व माता का नाम श्रीमती मूलमती देवी था। प्रारम्भ में आपके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। आपके पिताजी ने एक दो साल म्यूनिसिपैलिटी की नौकरी की तत्पश्चात् कचहरी में स्टाम्प बेचने लगे। फिर रुपये का लेनदेन भी करने लगे। बिस्मिल जी का एक बड़ा भाई भी था जिसका बचपन में ही निधन हो गया। बिस्मिल जी के पश्चात पांच बहनों और तीन भाइयों का भी जन्म हुआ। जब आप सात वर्ष के थे तब आपके पिताजी ने उन्हें हिंदी अक्षरों का बोध कराया तथा एक मौलवी साहब के मकतब में उर्दू पढ़ने भेज दिया। बचपन में आप बहुत शरारती थे। पांचवीं कक्षा में पढ़ते समय आपको घर से पैसे चुराने, सिगरेट व भांग पीने तथा उपन्यास पढ़ने की लत लग गई थी।

आर्यसमाज के विचारों का जीवन में परिवर्तन : आपके घर के पास ही देवमंदिर था, आपको उसके पुजारी ने ब्रह्मचर्य पालन व पूजा पाठ का उपदेश दिया। आर्यसमाज के मुंशी इंद्रजीत जी ने आपको संध्या करने का उपदेश दिया तथा सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ पढ़ने को दिया। उसे पढ़कर आपका जीवन पूर्णतः बदल गया। सारी बुरी आदतें छूट गई तथा जीवन सदाचार से आलोकित हो गया। आर्यसमाजी विद्वान स्वामी सोमदेव को आप अपना गुरू मानते थे। उन्होंने ही आपको राजनैतिक उपदेश दिया तथा स्वदेश हित में क्रांतिकारी बनने की प्रेरणा दी। देवतास्वरूप भाई परमानंद की फांसी की सजा सुनकर आपने अंग्रेजी राज्य को ध्वस्त करने की प्रतिज्ञा की।

काकोरी कांड व फांसी : आपने अपनी आत्मकथा में क्रांतिकारी दल बनाने, नौजवानों को संगठित करने, क्रांतिकारी कार्यो व अस्त्र-शस्त्रों के लिए पैसा एकत्र करने संबंधी विवरण विस्तारपूर्वक दिए हैं। दल की आर्थिक दशा सुधारने हेतु आपके नेतृत्व में क्रांतिकारी नौजवानों ने 9 अगस्त 1925 को काकोरी स्टेशन के पास रेलगाड़ी में से सरकारी खजाना लूट लिया। उसी वर्ष एक साथी को गद्दारी के कारण 25 दिसम्बर को तथा आपको अन्य साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। 17 दिसम्बर 1927 को श्री राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को गोंडा जेल में तथा श्री बिस्मिल को गोरखपुर जेल में, श्री अशफाक को फैजाबाद में व श्री रोशन सिंह को इलाहाबाद जिला जेल में (19 दिसम्बर को) फांसी पर लटका दिया गया। वे हंसते-गाते फांसी के तख्ते पर चढ़े। उन्होंने अपना जवानी की उमंगों, सभी ऐश्वर्यों का इसलिए त्याग कर दिया ताकि देश आजाद हो और आने वाली पीढ़ी सुखपूर्वक, जीवन का आनंद ले सके। अनन्त आकाश में एक वाक्य आज भी गूंज रहा है- शहीदों की चिताओं पर, लगाओगे किस दिन तुम मेले, तुम्हारे मेलों की खातिर, वो चढ़े फांसी पर अकेले।।

शहीद बिस्मिल की वसीयत : उन्होंने मौत के साये में अपनी आत्मकथा लिखी तथा फांसी के फंदे पर झूल गए ताकि उनके देशवासी सुख के हिंडोले में झूल सकें। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण जवानी अंग्रेजी साम्राज्य से टक्कर लेते हुए आहुत कर दी ताकि हम स्वराज्य का सुख भोग सकें। उन्होंने अनगिनत दिन भूखे-प्यासे रहकर काटे ताकि उनके देशवासी कभी भूखे न सोये। तो क्या यह हमारा परम कर्तव्य नहीं कि भावी पीढ़ी उनकी आत्मकथा पढ़े- पुस्तकालयों में रखें- साथियों में उनके विचारों का प्रचार करें? शहीद बिस्मिल की आत्मकथा हमारे लिए अनमोल वसीयत है।

स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत स्वामी श्रद्धानन्द

अपनी आत्मकथा में स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वयं को 'कल्याण मार्ग का पथिक' बताया था। सचमुच इनकी जीवन कथा अध:पतन के गहरे गड्ढे से निकल कर अपने जीवन को धर्म, समाज और देश के लिए बलिदान करने की ज्वलंत कहानी है। अपने किशोर और युवाकाल में कतिपय परिस्थितियों के कारण वे अपने मार्ग से भटके तो सही, किन्तु अपनी त्रुटियों तथा कमियों पर निरन्तर विजय पाने की चेष्टा भी निरन्तर चलती रही और अंतत: वह श्रेय के मार्ग पर चलने की पात्रता अर्जित कर सके। उनके जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन तो तब आया जब 1879 में उन्हें ऋषि दयानन्द के तेजस्वी एवं गरिमामय

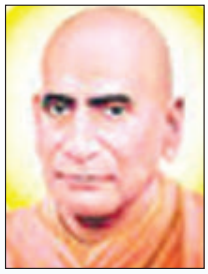

बलिदान : 23 दिस.
शत्-शत् नमन

व्यक्तित्व के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उन्होंने स्वीकार किया है कि तब उन्हें अपने अनिश्वरवादी होने का बड़ा गर्व था। यूरोप के तत्वविदों तथा दार्शनिकों के अध्ययन ने ईश्वर के प्रति उनके विश्वास को दोलायमान कर दिया था, किंतु महान् आस्तिक महर्षि से समय-समय पर वार्तालाप एवं शंका समाधान ने उनके हृदय में व्याप्त संशय तथा भ्रम को नष्ट कर दिया। ऋषि के मुख से उन्होंने उपनिषद् के निम्न मंत्र को सुना-

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेनलभ्यस्स्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥

परमात्मा की प्राप्ति, भाव भरे प्रवचनों को सुनने से नहीं होती और न बहुश्रुत होने या तीव्र मेधा प्राप्त करने से। परमात्मा तो जिसे अपने भक्त के रूप में वरण कर लेता है उसी के समक्ष अपने स्वरूप का प्रकाशन करता है। यही वह आर्ष वाणी थी जिसने युवक मुंशीराम को आस्तिकता की डगर का राही बनाया था। जब तक मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द को निकट से नहीं देखा और न जाना तब तक तो भारत के संन्यासी वर्ग के प्रति उनकी धारणा यही थी, कि ये भिक्षोपजीवी लोग समाज पर भार के तुल्य हैं।

दयानन्द के इस सम्पर्क ने उनके जीवन को श्रेयान्मुख कर दिया। जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने वकालत का पेशा अपनाया किंतु धर्म और समाज की सेवा ही उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहा। जिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में उनकी आस्था रही, उन्हें स्वयं के जीवन में क्रियान्वित करने तथा अन्यों को अपनाने की प्रेरणा देने में वे सदा तत्पर रहे। इसी प्रकार जिन विचारों और कार्यक्रमों को वे महत्वहीन समझते रहे, उन्हें। त्यागने में भी कोई संकोच नहीं हुआ। लाहौर में रहते समय वे आर्यसमाज तथा ब्रह्मसमाज के प्रति समान रूप से आकर्षित हुए थे, किन्तु जब 'सत्यार्थ प्रकाश' के अध्ययन ने उन्हें पुनर्जन्म के प्रति पूर्ण विश्वासी बना दिया, वे आर्यसमाज के प्रति समर्पित होकर वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक बन गए।

श्रद्धानन्द का सार्वजनिक जीवन निरंतर विकसित होता रहा किन्तु उनकी धुरी आर्यसमाज ही रही। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में उन्होंने आर्यसमाज के माध्यम से धर्म जागृति फैलाई। लाहौर और जालंधर दोनों उनके कर्मस्थल रहे जहां से उन्होंने वैदिक ज्ञान को प्रसारित किया। अपने प्रवचनों और शास्त्रार्थों के द्वारा उन्होंने पंजाब की जनता तक वेदों की कल्याणकारी विचारधारा को फैलाया। लाहौर में रहकर वे आर्यसमाज के गौरवशाली नेता बने और उन्होंने अनेक चुनौती भरे प्रश्नों का समाधान किया। जब मांसाहार के निषेध तथा पश्चात्य शिक्षा को महत्व न देने का सवाल उठा तो उन्होंने अपने चारित्रिक बल, सिद्धांत, निष्ठा तथा वैदिक धर्म के प्रति अनन्य प्रेम के कारण कठिनाईयां पाई। दलीय संघर्ष की इस अग्नि में तप कर लाला मुंशीराम का व्यक्तत्व कुंदन की भाँति चमका और वे न केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् के बेताज बादशाह बन गए। जिस समय वकील लाला मुन्शीराम ने लाहौर आर्यसमाज की सदस्यता का फार्म भरा था, उसी समय वयोवृद्ध लाला सांईदास ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था- 'आज एक नई शक्ति का प्रवेश समाज में हुआ है। यह तो भविष्य ही बताएगा कि यह आर्यसमाज को तारेगी या डुबाएगी।' चरित का अनुशीलन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि उन्होंने दयानन्द की शिक्षाओं को फैलाने में अपने सम्पूर्ण जीवन की आहुति दे दी थी। आज आर्यसमाज के सवा सौ वर्ष के इतिहास में दयानन्द के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द के तुल्य कोई ऐसी हस्ती नहीं दिखाई देती जिसने धर्म, समाज तथा राष्ट्र की सेवा में स्वयं को सम्पूर्ण रूप से समर्पित किया हो। ➲➲

वेद और कुरान में अंतर

कई बार आपने जाकिर नायक या किसी और मुसलमान को ये कहते सुना होगा कि कुरान अल्लाह का दिया है कुरान ईश्वर कृत है। आज मैं आप सबको इसकी वास्तविकता से अवगत कराता हूं, भारतीयों का मूल ग्रंथ वेद है और मुस्लिमों का कुरान अब इनमें क्या अंतर है ये जानिए-

1. वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो की सृष्टि के आरम्भ में 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 120 वर्ष पूर्व ईश्वर ने 4 ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया जबकि कुरान 1400 वर्ष पहले अरब देश के किसी मोहम्मद ने रचा और खुद को पैगम्बर घोषित किया।
2. वेद सृष्टि के आदि में जैसे थे वैसे ही आज भी है एक अक्षर भी नहीं बदला क्योंकि ये ऋषिओं ने परम्परा से कंठस्थ कर के सुरक्षित रखा जब की कुरान को कई बार बदलना पड़ा। वेदप्रकाश जी जो की पहले मुस्लिम मौलवी थे कुरान परिचय नामक ग्रन्थ लिखा है इसमें उन्होंने साफ लिखा है की कुरान कई बार बदला है, एक बार तो कुरान को पत्तियों पर लिखा था तो उसे बकरी खा गई थी बाद में फिर से लिखा।
3. क्या ईश्वर का ज्ञान परिवर्तित होता रहता है की जो पहले तो रेत दी फिर इंजील दी और बाद में कुरान दी; कुरान में भी कुछ आयते मन्सूख़ हो जाती है ऐसा क्यों जबकि वेद यथावत बने हुए है।
4. वेद सभी मानव-मात्र के लिए है जबकि कुरान मुस्लिम के लिए।
5. वेद में मानवता की बात है जबकि कुरान में दूसरे धर्म वालों को मार डालने के आदेश है।
6. वेद में ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापी बताया है जबकि कुरान में एक देशी जो सातवें आसमान पर एक तख्त जिसे अर्श कहते है पर बैठा है और वह साकार है, पता नहीं वहां क्या करता है?
7. वेद में एक ईश्वर की उपासना की बात कही है जबकि कुरान में ईश्वर कहने को तो एक ईश्वर की बात है पर रसूल को जो नहीं मानता उसे खुदा ज़न्नत नहीं देगा।
8. वेद का ईश्वर सर्वज्ञ है सब जानता है पर कुरान का ख़ुदा सब नहीं जानता उसे कर्मपत्र पढ़ने पड़ते है। कुरान में लिखा है जब सबका हिसाब होगा तब सबके गले में कर्मपत्र रहेंगे।
9. कुरान में बताया है कि जब सबका न्याय होगा तो तो मुसलमानों के लिए मोहम्मद सिफारिश करेगा तो खुदा उन्हें जन्नत में भेज देगा जबकि वेद के ईश्वर के सामने कोई सिफारिश नहीं चलती है।
10. वेद के अनुसार ईश्वर और जीव के बीच कोई बिचौलिया नहीं है जबकि कुरान के अनुसार पैगम्बर मोहम्मद को मानना जरूरी है।
11. वेद के अनुसार ईश्वर कर्म का फल तत्काल या बाद में या अन्य जन्मों में दे देता है जबकि कुरान का खुदा कयामत तक इंतजार करवाता है तब तक अपनी-अपनी पेशी का इंतजार कब्र में ही करना पड़ता है।
12. कुरान का ख़ुदा अन्यायी है क्योंकि जन्म से किसी को भी अच्छा बुरा धनी निर्धन स्वस्थ रोगी लूला लंगड़ा बना देता है; जबकि वेद के अनुसार ये सब पिछले जन्म के फल स्वरूप होता है तो ईश्वर न्यायकारी हुआ जबकि कुरान पुनर्जन्म को नहीं मानता।
13. वेदो के अनुसार जीवन का उद्देश्य दु:खों से छूट कर मोक्ष के आनंद को प्राप्त करना है जबकि कुरान के अनुसार 72 हूरों से भोग करना शराब की नहरों वाली कल्पित जन्नत को पाना ही उद्देश्य है।
14. वेद में सृष्टि की उत्पत्ति का वैज्ञानिक सिद्धांत है परमेश्वर प्रकृति जो की अनादि के कणों सत-रज-तम से सृष्टि बनाता है जबकि खुदा केवल कुन ऐसा कहता है और जादू से दुनिया बन जाती है; सब जानते है अभाव से भाव उत्पन्न नहीं होता है।
15. वेद के अनुसार ईश्वर जीव और प्रकृति तीनों अनादि है जबकि कुरान केवल खुदा अनादि है; यदि ऐसा है तो तो खुदा ने संसार क्यों और किसके लिए बनाया?
16. वेद के अनुसार किसी भी बात को तर्क की कसौटी पर कस कर ही मानों तर्क वे ऋषि जो तर्क करता हो वो ऋषि है, जबकि कुरान में तर्क को हराम माना है अर्थात जो लिखा है वही सही है रसूल पर शंका की तो दंड दिया जायेगा फतवा जारी हो जाता है।
17. वेद परमात्मा ने स्वयं ऋषियों के हृदय में दिए क्योंकि वह सर्वत्र है जबकि कुरान देने के लिए खुदा ने अपने फरिश्ते जिब्राइल को भेजा इसका अर्थ है की खुदा सर्वत्र नहीं है। अब आप ही विचारिये की कौन सी पुस्तक ईश्वर कृत है।

सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय
सनातन जयतु-जय मां भारती !!

भारत का स्वर्णिम काल

भारत के इतिहास में जिसे 'गुप्त काल' या 'सुवर्ण युग' के नाम से जाना जाता है, उस समय भारत ने साहित्य, कला और विज्ञान क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की। प्राचीन काल में भारतीय गणित और ज्योतिष शास्त्र अत्यंत उन्नत था। गुप्त काल में ही महान गणितज्ञ आर्यभट्ट का जन्म माना जाता है। भारत को विश्व में चमकाने वाले अनमोल नक्षत्र आर्यभट्ट ने वैज्ञानिक उन्नति में योगदान ही नहीं बल्कि इस क्षेत्र में चार चांद लगाया। 'आर्यभट्टीय' नामक ग्रंथ की रचना करके, उन्होंने भारत को विश्व में गौरवान्वित किया। आर्यभट्ट द्वारा की गई जीरो की खोज ने समस्त विश्व को नई दिशा दी।

माना जाता है कि आर्यभट्ट बिहार राज्य की राजधानी पटना जो उस समय पाटलीपुत्र के नाम से मशहूर थी, के निकट कुसुमपुर के रहने वाले थे। माता-पिता का नाम तथा वंश परिचय के बारे में प्रमाणित जानकारी नहीं मिलती। अनुमानो के आधार पर उनकी जन्म तिथि 13 अप्रैल 476 और मृत्यु 550 में मानी जाती है। इसी के आधार पर प्रसिद्ध अंर्तराष्ट्रीय संस्था यूनेस्को ने आर्यभट्ट की 1500वीं जयंती मनाई थी।

उस समय मगध विश्वविद्यालय विद्या का केन्द्र था। यहां पर खगोल शास्त्र के अध्ययन के लिये एक अलग विभाग था और बौद्ध धर्म विख्यात था। उस दौरान जैन धर्म भी अपने चरम पर था। लेकिन आर्यभट्ट के श्लोकों से लगता है कि वे इन धर्मों का अनुसरण नहीं करते थे । प्राचीन कृतियों के रचनाकारों की तरह वे अपने श्लोकों के प्रारंभ में इष्ट देव की स्तुति करते और माना जाता है कि ब्रह्मा के वरदान से ही उन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान आदि प्राप्त किया था। हालांकि भारत में खगोल शास्त्र का जन्म आर्यभट्ट से पहले सदियों पूर्व हो चुका था। यहां पर पंचांग के नियम नक्षत्र विभाजन आदि ईसा के जन्म से 13-14 शताब्दी पूर्व ही बनाये जा चुके थे। वेदों में भी खगोल विद्या का विवरण मिलता है। किन्तु आर्यभट्ट के समय खगोल शास्त्र की स्थिति खास अच्छी नहीं थी। उस समय प्रचलित पितामह सिद्धान्त, सौर्य सिद्धान्त, वशिष्ठ सिद्धान्त रोमक सिद्धान्त और पॉली सिद्धान्त पुराने हो चुके थे। इनसे गणित के सिद्धान्त हल नहीं हो रहे थे। ग्रहण की स्थिति की सही जानकारी नहीं मिल पा रही थी, जिससे लोगों का विश्वास भारतीय ज्योतिष से उठने लगा था। आर्यभट्ट ने, उसमें मौजूद त्रुटियों को दूर करके उसे नवीन तथा प्रभावी रूप प्रदान किया। गुप्त काल के महान गणितज्ञ और खगोल शास्त्री आर्य भट्ट ने तीन ग्रन्थ लिखे थे। दश गितिका, आर्यभट्टियम तथा तन्त्र। आर्यभट्ट का मानना था कि, रचना महान होती है रचनाकार नहीं।

अद्भुत प्रतिभा के धनी आर्यभट्ट ने अनेक कठिन प्रश्नों के उत्तर को एक श्लोक में समाहित कर दिया है, गणित के पांच नियम एक ही श्लोक में प्रस्तुत करने वाले आर्यभट्ट ऐसे प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य के चक्कर लगाती है। इन्होंने सूर्यग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण होने वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला। आर्यभट्ट को यह भी पता था कि चन्द्रमा और दूसरे ग्रह स्वयं प्रकाशमान नहीं हैं, बल्कि सूर्य की किरणें उसमें प्रतिबिंबित होती हैं।

23 वर्ष की आयु में आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्टीय ग्रंथ' लिखा था, जिससे प्रभावित होकर राजा बुद्ध गुप्त ने आर्यभट्ट को नालन्दा विश्वविद्यालय का प्रमुख बना दिया। उनके सम्मान में भारत के प्रथम उपग्रह का नाम आर्यभट्ट रखा गया था। 16वीं सदी तक के सभी गुरुकुल में आर्यभट्ट के श्लोक पढ़ाए जाते थे। आर्यभट्ट ने ही सबसे पहले 'पाई' की वैल्यू और 'साइन' के बारे में बताया। गणित के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल करने के लिए उन्होंने ही समीकरणों का आविष्कार किया, जो पूरे विश्व में प्रख्यात हुआ। एक के बाद ग्यारह शून्य जैसी संख्याओं को बोलने के लिए उन्होंने नई पद्धति का आविष्कार किया। बीज गणित में भी उन्होंने कई महत्वपूर्ण संशोधन किए और गणित ज्योतिष का 'आर्य सिद्धांत' प्रचलित किया। भारत के पहले गणितज्ञ और खगोल शास्त्री आर्यभट्ट को सम्मान देते हुए 2012 को गणित वर्ष मनाया गया था। शिकागो से जारी वैज्ञानिकों की रिपोर्ट में आर्यभट्ट का नाम भी पूरे सम्मान से स्थापित किया गया है। आर्यभट्ट एक महान व्यक्ति थे, जिन्होंने गणित विषय का गहराई से अध्ययन और विश्लेषण किया। दुनिया को महानतम खोज देने वाले भारत के इस महान गणितज्ञ को हम हम शत्-शत् नमन करते हैं।

Jallianwala Bagh

Article by- Rajat Mitra : Psychologist and Author of 'The Infidel Next Door'

Why Indians fired on IndiansI lived in Hong Kong for some years. One of the facts I observed was that Hong Kongers by and large do not like Indians and many of them even hate us. Whether an Indian goes on to look for a home or on the streets to buy groceries, the feeling is palpable. Many Indians I talked to said they feel it rather strongly. I had asked several people but got no satisfactory answer.

Finally, I asked a local friend about the reason. He was a historian at one of Hong Kong's University. At first he tried to deny that this exists but then later said the roots of it are historical. "Do you know," he said, "the British came to Hong Kong in 1841 and when they tried to build the first police force with the help of locals, they realized that the loyalty of the locals cannot be trusted to follow their orders or shoot and kill if their fellow brethren revolted or were a rebellion. But they realized they didn't have the same experience in India. So they brought the Indians. The first batch of Indians who came brutalized and tortured the people here. The memory still lives in the mind of every person here and we haven't forgiven you for it and will never do," he said in a deeply emotional voice. "You Indians followed orders and didn't show any mercy towards us which we expected you would do."

I could only apologize to him and said it was an injustice. But what he had said left me perturbed. In social sciences 'the other' is a term that denotes how human beings divide, create walls with other groups whom they perceive as not similar to them and even inferior. For the American 'the other' is everyone who is outside America. For the British everyone who is not White and outside the country is 'the other'. But the curious thing for Indians is that for many an Indians 'the other' is not an outsider but another Indian only with whom his deepest chasm lies. He is someone whom we make into an enemy.

"You Indians, you have done it with your own people, like in Jallianwala Bagh. That is how the British controlled your nation for two centuries, isn't it?" The historian's words have stayed with me since then.In one of his books, Amitav Ghosh, the author, writes that the British believed that the Indians can always be relied upon to ruthlessly put down any one whether their own in India or anywhere else on their orders, something they could never imagine doing with anyone else. Would a Japanese be ever trusted to fire on its own people on the orders of a foreign General? Would a Chinese army have done so when asked? I believe the answer is a big no.As one ex-General from the former British Indian army said, "The British were masters in making the Indian people believe that they were fighting on the side of the truth and so when the Indians fought a fellow Indian they saw him as evil and felt little or no guilt killing him."

Is that why even today we are deeply divided, can torture a fellow Indian and feel little empathy, even shoot at him or beat him to death?Why did we Indians create 'the other' amongst each other and not outside like other nations do?Once, a British historian, on the mention of Jallianwala Bagh, said that a British police force or army would never shoot at its own people if asked to do so. ■■

!! महान !!

किया स्वदेश स्वजाति का, सीस वार उद्धार।
अश्रद्धा-युग हमें हुए, श्रद्धा के अवतार॥
कहते लोग वकील हा ! छोड़ रहा घर बार।
हिमगिरि सुरसरि सोचते, अहो ! बढ़ा परिवार॥

भारत के सब जाये हैं, जग जननी के पूत।
छुमन्तर से शुद्धि के, कर दी छूत अछूत॥
घर में जा अल्लाह के, दिया खूब उपदेश।
अल्लाह औ प्रभु एक है, तजो द्वैत औ द्वेष॥

घुस न सकी सरकार की, जिस उर में संगीन।
देश-बंधु की गोलियां, हुई वहीं लव-लीन॥
दयानन्द की वेदी पर, दिया सीस-बलिदान।
लेखराम के सत्सखा, मुन्शीराम महान।
आर्य-तत्व के स्नेह का, जलता जहां प्रदीप।।

➲ कविता आर्या

वह शक्ति हमें दो दयानिधे...

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर-सेवा पर-उपकार में हम, जग-जीवन सफल बना जावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे....

हम दीन-दुखी निबलों-विकलों के, सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके, भूले-भटके, उनको तारें खुद तर जावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे....

छल, दंभ-द्वेष, पाखंड-झूठ, अन्याय से निशिदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम-सुधा रस बरसावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे....

निज आन-बान, मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश-जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे....

➲ पंडित रामप्रसाद बिस्मिल

स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धा जीवन का आराध्य है, श्रद्धा सुमन में भरी सुगंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गए श्रद्धानन्द
सत्य का आधार मिला, सद् चिन्तन का व्यवहार मिला
सद् कर्म सद्भावना का संस्कार मिला
इतिहास को नया आकार मिला
श्रद्धावान बनकर मिटाए तुमने सारे द्वन्द
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, अंधकार में भटके समुदाय
अपने भी जब लगे पराए, परतंत्रता का दंश रुलाए
सूझे जब न कोई उपाय, शुद्धि के पावन मंत्र से खोले सारे बंद
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, सद्ज्ञान का दीप जलाए
गुरुकुलों का भाग्य जगाया, संस्कृति का पथ सजाया
बिछुड़ों को तब गले लगाया
हर कली पुष्प में, चिन्तन की भरने लगी सुगंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गए श्रद्धानन्द
अहंकार ने राख भरी राष्ट्र के सुहाग में
कलियां पुष्प खूब जले जुल्म की आग में
विष ही विष भरा हुआ था सत्ता के नाग में
बहारें जब घायल हुई जलियांवाले बाग में
अमृतसर में राष्ट्रीय चेतना का तुमसे गूंजा शंख
धर्म के यज्ञ समर्पण में समिधा बन गए श्रद्धानन्द
दयानन्द के तुम अनुयायी धर्म के तुम प्रखर सिपाही
सत्य पथ के तुम हमराही तीन गोलियां सीने पे खाईं
भूत-भविष्य-वर्तमान का श्रद्धा से, जुड़ा संबंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में समिधा बन गए श्रद्धानन्द।

➲ विजय गुप्त

ओ३म् का जाप सर्वश्रेष्ठ

ओ३म् का जाप स्मरण शक्ति को तीव्र करता है, इसलिए वेदाध्ययन में मंत्रों के आदि तथा अंत में ओ३म् शब्द का प्रयोग किया जाता है। मनुस्मृति में आया है कि ब्रह्मचारी को मंत्रों के आदि तथा अंत में ओ३म् शब्द का उच्चारण करना चाहिए। क्योंकि आदि में ओ३म् शब्द का उच्चारण न करने से अध्ययन धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है तथा अंत में ओ३म् शब्द न कहने से वह स्थिर नहीं रहता है।

कठोपनिषद में नचिकेता की कथा आती है। नचिकेता ने यम ऋषि से पूछा- हे ऋषि, मुझे यह बताइये कि संसार में सार वस्तु क्या है? इस पर ऋषि ने उत्तर दिया, सब वेद जिस नाम के संबंध में वर्णन करते हैं, सभी तपस्वी जिसके विषय में कहते हैं, जिसकी प्राप्ति की इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस नाम के संबंध में मैं संक्षेप में बताता हूं- वह ओ३म् नाम ही परमात्मा का श्रेष्ठतम नाम है।

यजुर्वेद में आया है कि मृत्यु को जीतने और मोक्ष को प्राप्त करने के लिए ओ३म् के अतिरिक्त और कोई भी मार्ग नहीं है। यमाचार्य ने तो नचिकेता को ओ३म् का महत्व बताते हुए यहां तक कह दिया है कि यह ओ३म् अक्षर निश्चय ब्रह्म है। यह ही अक्षर ब्रह्म के सब नामों में श्रेष्ठतम है। इस अक्षर को जान लेने के बाद जापक जो इच्छा करता है उसकी वह इच्छा निश्चयपूर्ण हो जाती है।। ऋग्वेद ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है-हे वीर प्रभो, आपकी मित्रता कठिनाई से नष्ट होने वाली है। अर्थात आपकी मित्रता स्थाई तथा विश्वसनीय है। आप गाय चाहने वाले के लिए गाय हैं तथा घोड़ा चाहने वाले के लिए घोड़ा है। इस प्रकार ओ३म् के जापक को सभी उचित वस्तुएं सुलभ हो जाती हैं। प्रश्नोपनिषद् में तो पिप्पलाद ऋषि ने यहां तक कह दिया है कि जो निरंतर इस तीन मात्राओं वाले ओ३म् अक्षर के द्वारा परब्रह्म का ध्यान करता है वह तेज में सूर्य के समान सम्पन्न हो जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार देवता भी इस अविनाशी, अमर तथा अभय ओ३म् अक्षर का सहारा लेकर अमर तथा अभय हो गये।

गीता में श्रीकृष्ण इस ओ३म् अक्षर का महत्व बताते हुए अर्जुन से कहते हैं- इस एकाक्षर ब्रह्म स्वरूप ओ३म् का स्मरण करता हुआ जो मनुष्य इस शरीर का परित्याग करता है वह परमगति (मोक्ष) को प्राप्त होता है। मुण्डकोपनिषद् ओ३म् की महिमा के वर्णन में कहता है- ओ३म् का जाप करने से हृदयग्रन्थि (सूक्ष्म शरीर) टूट जाती है। सब प्रकार के संशय नष्ट हो जाते हैं। उसके सब कर्म क्षीण हो जाते हैं। उस इन्द्रियातीत ओ३म् के दर्शन करने मात्र से ही।

कठोपनिषद में आगे कहा है- ओ३म् अनित्यों में एक नित्य है। अनेकों में वही एक है। श्रेष्ठ कामनाओं का वही एक पूरक है। जो धीर पुरुष इस ओ३म् को अपनी आत्मा में देखते हैं केवल उन्हें ही परम शान्ति प्राप्त होती है, अन्यों को नहीं। आत्मा में विराजमान इस परमात्मा को धीर पुरुष परा विद्या से साक्षात्कार किया करते हैं क्योंकि यह ओ३म् इन्द्रियातीत है। वह नित्य, विभु, सर्वव्यापक, सूक्ष्म, अव्यय तथा सब प्राणियों का कारण है। वह गोत्र, वंश, आंख, कान, हाथ, पांव से रहित है, वह संसार की बीज शक्ति है, वह अशरीर है।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

महर्षि दयानन्द का अमरबलिदान

महर्षि दयानन्द जी ने जीवनभर सत्य की खोज की और गुरुवर विरजानन्द जी से विद्या पाकर धर्मक्षेत्र में कदम रखा। दीपावली के दिन उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये व सदा के लिये अमर हो गये। इस लेख में हम यह जानने का प्रयास करेंगे, कि महर्षि दयानन्द ने जोधपुर के समय राजपुरुषों के सदाचार विरुद्ध कर्मों की किस प्रकार निंदा की। इसके कारण जोधपुर नरेश की प्रेमिका नन्हीं भगतन वेश्या आदि ने मिलकर छल द्वारा उनको विष देकर मारने का षड्यंत्र रचा। स्वामी जी ने जोधपुर वालों को जो पत्र लिखा था, उन्होंने कहा था-

अब मैं यहां बीस-पचीस दिन रहना चाहता हूं, यदि कोई नैमित्तिक प्रतिबंध न होगा। मैं यह समझा कि यहां आकर आपका धन व्यय व्यर्थ कराया, क्योंकि मुझसे आपका उपकार कुछ भी नहीं हुआ। और आपकी ओर से मेरी सेवा यथोचित होती रही। जब श्रीमान् गुणज्ञाता हैं इसीलिये जब-जब मुझको अवकाश मिलता है, तब-तब पत्र द्वारा कुछ निवेदन कर देता हूं। उस मेरे निवेदन को देख सुनकर आप प्रसन्न होते हैं, इसीलिये तीसरी बार लेख करने के लिये मुझ तो समय मिला।'

जो-जो श्रीमानों के प्रशंसनीय गुण, कर्म, स्वभाव है उनके कलंक नीचे लिखे हुए काम है। एक वेश्या से जो नन्हीं कहाती है उससे प्रेम, उसका अधिक संग और अनेक पत्नियों से न्यून प्रेम रखना आप जैसे महाराजों को सर्वथा अयोग्य है। आदि आदि। यहां पर संपादकीय टिप्पणी है- इन शब्दों का स्पष्ट अर्थ यही है कि स्वामी जी महाराज जोधपुर से सर्वथा निराश हो चुके थे। वे जोधपुर से जाने का मन बना चुके थे। टिप्पणी यह भी है कि पूरा पत्र 'पत्र और विज्ञापन' ग्रंथ में पृ.463 (द्वितीय संस्करण) पर देख सकते हैं। अब स्पष्ट है स्वामी दयानंद ने पहली ही बार में कटुशब्द कहना शुरु नहीं किया। वे इसके पहले भी दो पत्र राजा को लिख चुके थे और उन्होंने स्वामीजी के निर्देशों को माना। साथ ही अनेक बार वेश्यागमन आदि त्यागने के उपदेश का कुछ खास असर राजा व राज्य में पड़ा नहीं इसलिये स्वामीजी को जोधपुर से जाने का मन हो रहा था।

गौरतलब है कि जीवनी-ग्रंथ में पूरा पत्र नहीं, मात्र उसका एक अंश है। और उससे भी छोटा अंश हमने लिखा। उसके आधार पर पोंगा जी ने यह धारणा बना ली कि स्वामीजी प्रेम से सुधारने के बजाय सीधे कटुवचन कहकर डांटने लगे! जोधपुर में राजा के भाई प्रतापसिंह की नीयत, स्वामी जी हेतु नियुक्त नौकरों की धूर्तता व चोरी की घटना, नन्हीं भगतन का षड्यंत्र, रसोइये का बिक जाना और डॉक्टरों की जबरन लापरवाही आदि जोधपुर में हुये कलंक पूर्ण कार्य थे। और स्वामीजी के पत्र के द्वारा वहां हो रही समलैंगिकता, वेश्यावृत्ति को ग्रंथकार 'कलंक' कहते हैं। महर्षि ने यह पंक्ति राजा को पत्र में नहीं लिखी। इतनी सरल बात पोपजी को समझ नहीं आई।

महर्षि दयानन्द का राजा को सदुपदेश व नन्हीं का षड्यंत्र- महाराजा श्रद्धा तथा प्रेम से सत्योपदेश को अपने सुधार का साधन बना रहे थे। नन्हीं भगतन यह सब कुछ देखकर जलभुन रही थी। फिर उस पत्र के आने पर जब महाराजा को अपने से कुछ कटा-कटा पाया तो उसे लगा कि स्वामी जी ने उस पर अति की है- गज़ब ढायी है। जैसे भी हो, बदला लेना चाहिये। 'देशहितैषी' ने इन शब्दों में इसका संकेत किया है-इस राज्य में स्वामी जी महाराज के चार मास तो ठीक-ठाक निकल गए इस अवधि में महाराजाधिराज और उनके भाई बंधु तथा ठाकुर लोग भी आते और उपदेश पाते रहे। परंतु स्वामी जी महाराज को अपने सत्य संकल्प अनुसार राज्य में जो-जो अनाचार कुछ और दिखाई पड़ते थे उन सब का निर्भयता से खंडन करते थे और वेश्या गमन के दोषों पर बल देकर कहते थे कि राजपुरुष सिंह के समान है तथा वेश्या कुतिया के तुल्य है तो क्या यह योग्य है कि सिंह व धोकर कुतिया का संग करें। अनेक प्रकार के उपदेश तथा अनेक प्रकार के ऐतिहासिक प्रेरक प्रसंग सुना इस राजधानी को प्राचीन आर्य राजाओं के ढंग पर लाने का प्रयास करते थे। महाराज ,ठाकुर, उमराव सभी प्रसन्नतापूर्वक उन्हें सुनकर धन्यवाद देते थे।

■■ कार्तिक अय्यर

समाचार - सूचनाएं

- 14 नवम्बर महर्षि देव दयानन्द के निर्वाण दिवस पर यज्ञ, भजन व सारगर्भित प्रवचन 'दयानन्द गाथा' आचार्य जयेन्द्र कुमार द्वारा सदस्यों को श्रवण कराई गई और दीपों के पावन त्योहार पर दीपावली मनाई गई।
- 14 नवम्बर महात्मा हंसराज स्मृति दिवस और पं. जवाहर लाल नेहरू का जन्मदिवस बाल दिवस के रूप में मनाया गया।
- 17 नवम्बर लाला लाजपत राय बलिदान दिवस पर भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 24 नवम्बर वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु के स्मृति दिवस पर याद किया गया।
- 1966 के गौरक्षा आंदोलन की स्मृति में धरना प्रदर्शन जंतर-मंतर कर किया गया। गौरक्षा अभियान समिति की अगुवाई में देश के संत समाज व आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक से गौरक्षा हेतु एक विशाल सत्याग्रह आरंभ किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा आंदोलन को दबाने के लिए निहत्थे संतों, प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाई गई। सैकड़ों साधु व गौरक्षक मारे गये और कईयों को जेल में ठूंस दिया गया। उन्हीं को श्रद्धांजलि देते हुए आयोजकों ने गौरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने और सरकार से सख्त कानून बनाने के लिए मांग की गई। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, ठाकुर विक्रम सिंह व अन्य लोग उपस्थित थे।

विनम्र श्रद्धांजलि

आर्यजगत को भारी क्षति! ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, एटा जनपद के सकतपुर ग्राम के निवासी पूर्व प्रवक्ता एवं आर्य समाजी रामचन्द्र वर्मा का निधन हो गया। उन्होंने अपने कार्यकाल में आसपास के क्षेत्र में आर्य समाज की स्थापना की और समाज के लोगों में समाजहित और परिवार हित में काम किया। श्री वर्मा आयुर्वेद के भी अच्छे चिकित्सक थे। ऐसे आर्यसमाजी के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

आर्य समाज नोएडा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री मनोवीर आर्य जी के पिताजी श्री चन्द्रपाल आर्य जी का पिछले दिनों निधन हो गया। उन्होंने अपना सारा जीवन सामाजिक कार्य में समर्पित किया। ऐसे आर्यसमाजी के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

आर्य समाज के दानवीर भामाशाह, परम ईश्वर भक्त, यज्ञ भक्त, उदारमना, प्रेरणास्रोत, कर्मवीर, शूरवीर, सेवा साधना के हिमशिखर, विश्वविख्यात समाजसेवी, भारत के महान विभूति, महान याज्ञिक, अनेक विद्यालयों के संस्थापक, गुरुकुलों के पोषक, गौभक्त, वैदिक धर्म के अनुयायी, अनेक संस्थाओं के पालक-पोषक, वेदविद्या के उन्नायक, आर्य नायक, धर्म नायक, राष्ट्र नायक, पुरुषार्थी, ईमानदार, त्यागी, संकल्प के धनी, अनथक परिश्रमी, मसालों के शहंशाह, एमडीएच के चेयरमैन महाशय धर्मपाल गुलाटी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए रविवार को सत्संग में आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम नोएडा के समस्त अधिकारी, आचार्य, सदस्य एवं ब्रह्मचारीगण।

विशेष निवेदन : आर्य समाज नोएडा के अन्तर्गत आर्ष गुरुकुल शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र पिछले कई वर्षों से क्रियाशील है और ब्रह्मचारियों को कोरोना महामारी के कारण संस्था में सहयोग प्राप्त नहीं हो पा रहा है। सरकार की ओर से किसी प्रकार का अनुदान संस्था को नहीं प्राप्त होता। आप जैसे क्रियाशील महानुभावों जो भारतीय वैदिक संस्कृति के पोषक हैं, उन्हीं द्वारा सहयोग मिलता है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अपना आशीर्वाद बनाए रखें व यथासंभव सहयोग प्रदान करें। संस्था को 17 X 80 G की सुविधा प्राप्त है, जिसे आप ले सकते हैं।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

जीवन के पंचशील सिद्धांत

सृष्टि के आरंभ से लेकर के आज तक अनेक धर्म एवं संप्रदाय चले, बहुतेरी सभाएं और समितिया बनी। इन सबका प्रादुर्भाव मनुष्यों के बीच में हुआ। इससे स्पष्ट है कि मानवता के प्रश्न को सुलझाने के लिए मानव जीवन की समस्याओं को पूरा करने के लिए अर्थात् मनुष्य व्यक्ति जीवन, गृहस्थ जीवन, सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन और आध्यात्मिक जीवन सुखी बने, श्रेष्ठ हो, ऊंचा उठे, यह उद्देश्य इन सभी धर्मों मत एवं समितियों का है। संसार में सर्वप्रथम दो प्रकार का जीवन देखने को मिलता है। 1. चेतन जीवन और 2. जड़ जीवन। चेतन जीवन में मनुष्य, मनुष्य पशु पक्षी प्राणी वर्ग। दुख-सुख एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति करने की संभावना जड़ जीवन में नहीं है। मनुष्य ही चेतन सत्ता है और वह ही चिंतन करता है। जिस व्यक्ति जिस समाज और जिस राष्ट्र में अपने व्यक्तित्व को रखने की शक्ति नहीं वह जड़ निकम्मा और निरर्थक है और भी कहा है... वियुज्यमाने हि तरौपुष्पैरपि फलैरपि। पततिछिद्यमाने वा तरुरन्योन शोचते।। किसी वृक्ष के फूल आने बंद हो जाए, फलाने बंद हो जाए, गिर जाने पर या काट दिए जाने पर पास्ता खड़ा वृक्ष उसके संबंध में कुछ सोच नहीं सकता, चिंता नहीं पड़ता सहानुभूति हीन जीवन जगजीवन है चाहे वह व्यक्ति हो समाज हो या राष्ट्र हो।

चेतन जीवन के दो विभाग हैं- 1. मनुष्य का जीवन उसे मानव जीवन के नाम से कहेंगे। 2. मानव से अतिरिक्त प्राणियों का जीवन उसे जान्तव जीवन के नाम से कहेंगे। नाना प्रकार की विद्याओं को अध्ययन करके सीखता है, और विकास की ओर बढ़ता है। मानसिक कल्याण को प्राप्त करता है। अध्यात्म मार्ग पर चलता हुआ परमात्मा की उपासना से परमानंद की प्राप्ति और परम शांति मोक्ष को पाता है। जीवन को परम और सफल बनाने के लिए सुखद बनाने के लिए वेद ने पंचशील सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं।

1. स्वावलम्बन की भावना- स्वयंवाजिस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजयस्व स्वयंयज्ञस्व महि तेऽन्येन न सन्नशे।। यह वाजिद शक्तिशालिन् जीवात्मन् मनुष्य! स्वयं अपने तनु शरीर को समर्थ बना। सिर के समस्त साधनों अर्थात् कर्मेंद्रियों-ज्ञानेंद्रियों और अंत:करण को समर्थ बना। पैरों में चलने की शक्ति है। इसे मनुष्य ने स्वयं उत्पन्न किया है। बालक ने उठ उठ कर गिर-गिरकर कर चल-चल कर स्वयं शक्ति उत्पन्न किया है। उसके अंदर उठने और चलने की भीतरी इच्छा और भीतरी प्रयत्न होता था। यदि भीतरी इच्छा से काम नहीं किया जाए तो कोई मनुष्य अपने घर से कहीं भी आने-जाने में समर्थ नहीं होता। हे मनुष्य! तू अपनी सभी शक्तियों को समर्थ बना। जो समाज और जो राष्ट्र स्वभावलंबी होता है। वह संसार में उठ जाता है, उन्नत होता है।

2. आशावाद- कृतं मे दक्षिणेहस्तेजयो मे सव्य आहित:। कर्म मेरे दाएं हाथ में और जय विजय फिर बाएं हाथ में है। मेरे दोनों हाथ भरे हुए हैं, रिक्त नहीं है। शेखचिल्ली की भांति हाथ पर हाथ रख कर बैठने वाला नहीं हूं। इसलिए मैं गोवो और भूमि का विजेता बनूं, घोड़ों और राष्ट्रों का विजेता बनूं, धन और संपत्ति का विजेता बनूं।

3. कर्मण्यता- कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:। मनुष्य को निरंतर शुभ कर्म करते हुए सौ वर्षों तक, अधिक से अधिक वर्षों तक, जीने की इच्छा करनी चाहिए। एक कर्म समाप्त हुआ तो, दूसरा आरंभ कर देना चाहिए, दूसरा समाप्त हुआ तो तीसरा आरंभ कर देना चाहिए। यावत् जीवन निरंतर काम करते रहने से निष्काम कर्म होगा। सकाम कर्म तब होगा, जब कर्म करते रुक जाएगा। उसके फल की टोहनी में पड़ेगा, कर्म का फल तो ईश्वर की व्यवस्था से अनिवार्य है।

4. यशस्वी होने की भावना- यशो मा द्यावापृथिवी यशो मा इन्द्राबृहस्पति। मेरे माता पिता मेर यश का कारण हो, मैं माता पिता की आज्ञा का पालन करूं। जिससे मेरा यश हो मैं अपने आचार्य के आदेश का पालन करूं। जिससे मेरा यश हो, आचार्य मेरे यश का कारण हो, मैं आचार्य के आदेश का पालन करूं। जैसे स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानंद के आदेश का पालन किया। वेद में माता-पिता और आचार्य विद्वानों के आदेश का पालन करना, यश का साधन बताया है।

5. आस्तिक भावना- मैं अपनी देह से संवाद करता हूं, पूछता हूं, ए मेरी देह तू मुझे यह बता कब मैं वरने योग्य वरने वाले परमात्मा में अपने को विराजमान हुआ देखूं? देह से संवाद इसलिए है कि जो जन्म से मरण प्रयन्त साथ देती है। पर हे मेरी देह एक दिन तू भी मेरा साथ छोड़ देगी। तू तो मेरे रहने की कुटिया है, टूटने-फूटने वाली है। तो अपने टूटने-फूटने से पहले मेरे वरुण के अंदर बिठाती जा। वह मेरी किस भेट को स्वागत के लिए स्वीकार कर सकें। आस्तिकता के बिना परमात्मा से नहीं जुड़ा जा सकता। यह जीवन के पंचशील सिद्धांत कहाते हैं। इनको जीवन में धारण करने पर निश्चित ही मनुष्य मोक्ष की तरफ बढ़ जाता है।

आचार्य करण सिंह, नोएडा

कैंसर को दूर रखने वाले फूड्स

कैंसर को दूर रखने वाली चीजें

एलोवेरा : रिसर्च से पता चला है कि इसमें मौजूद पाइथोन्यूट्रियंट्स कैंसर सेल्स का खात्मा करती हैं। इसलिए रोज ऐलोवेरा का जूस पीना चाहिए जिससे भविष्य में कैंसर होने का खतरा टल सके।

वीट ग्रास : यह एक ब्लड प्यूरीफायर और लीवर तथा किडनी को साफ करता है। आपको रोजाना वीट ग्रास पीना चाहिए जिससे कैंसर का रिस्क कम हो सके।

कैंसर से बचने के लिए कुछ ऐसे ही फूड्स हैं जिनका आप रोजाना अपनी डाइट में प्रयोग कर सकते हैं

- कैंसर से बचने के लिए ऐसे कुछ फूड्स हैं जिनका आप रोजाना अपनी डाइट में प्रयोग कर सकते हैं
- एक रिसर्च से पता चला है कि एलोवेरा में मौजूद पाइथोन्यूट्रियंट्स कैंसर सेल्स का खात्मा करती हैं
- लहसुन में कैंसर विरोधी गुण होते हैं जो कैंसर को दूर रखने में मदद करते हैं

कैंसर का नाम आते ही पूरा शरीर कांप जाता है। कैंसर एक जानलेवा बीमारी है जिसका तुंरत पता नहीं चला तो इंसान की जिंदगी का खात्मा समझो। पर अब घबराने की जरूरत नहीं है अभी तक हमें कैंसर से मौत का ही पता है लेकिन अब ऐसी-ऐसी तकनीक आ चुकी हैं जिससे कैंसर को दूर किया जा सकता है। अच्छा होगा कि आप कैंसर होने का इंतजार ना कर के उससे बचाव की ओर कदम बढ़ाएं। कैंसर से बचने के लिए कुछ ऐसे ही फूड्स हैं जिनका आप रोजाना अपनी डाइट में प्रयोग कर सकते हैं। कैंसर को अच्छी डाइट और लाइफस्टाइल अपना कर भी दूर रखा जा सकता है। कैंसर से बचाव करने इके लिए कुछ खाद्य पदार्थ हैं जिसका आपको नियमित पय्रोग करना होगा।

लहसुन : आमतौर पर लहसुन का प्रयोग खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिए किया जाता है। जैसे लहसुन खाने का स्वाद बढ़ा देता है, वैसे ही इसके अन्य कई फायदे भी हैं, जो चौंका देते हैं। लहसुन औषधीय गुणों से भरपूर है, जो आपको स्वस्थ रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई लोग इसके गुणों से वाकिफ ही नहीं हैं। सुबह खाली पेट लहसुन का सेवन हमारे शरीर को कई लाभ देता है। लहसुन में इम्यून सिस्टम को मजबूत करने की ताकत होती है। साथ ही इसमें विरोधी कैंसर गुण भी होते हैं जो कैंसर को दूर रखने में मदद करते हैं।

मिर्च : मिर्च में पिपराइन नामक तत्व होता है जो कि मजबूत एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरा होता है। जब मिर्च का सेवन नियमित रूप से किया जाने लगता है तो कैंसर सेल्स ग्रो करना बंद कर देती हैं, जिससे कैंसर का रिस्क खत्म हो जाता है।

गाजर : गाजर के जूस में वे तत्व पाए जाते हैं जो कि कैंसर तक को क्योर कर सकते हैं। कुछ दिन पहले ही ये खबर छपी थी कि अमेरिका में एक महिला ने अपना कैंसर गाजर का रोज जूस पी कर खत्म कर लिया था।

हल्दी : यह एक एंटी-कैंसर के एजेंट के रूप में कार्य करता है। यह कैंसर कोशिकाओं को आगे के विकास के लिए रोकती है। इसे भोजन में मिला कर कैंसर रोकने में मदद हो सकती है।

आर्यसमाज के दस नियम

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

!! ओ३म् !!

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी अमर हुए

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, आर्य समाज के दानवीर भामाशाह, परम ईश्वर भक्त, यज्ञ भक्त, उदारमना, प्रेरणास्रोत, कर्मवीर, शूरवीर, सेवा साधना के हिमशिखर, विश्वविख्यात समाजसेवी, भारत के महान विभूति, महान याज्ञिक, अनेक विद्यालयों के संस्थापक, गुरुकुलों के पोषक, गौभक्त, वैदिक धर्म के अनुयायी, अनेक संस्थाओं के पालक-पोषक, वेदविद्या के उन्नायक, चिर युवा, आर्य नायक, धर्म नायक, राष्ट्र नायक, पुरुषार्थी, ईमानदार, त्यागी, संकल्प के धनी, अनथक परिश्रमी, मसालों के शहंशाह, एमडीएच के चेयरमैन

आर्यजगत की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

ओ३म् **विश्ववारा संस्कृति** ओ३म्

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221